पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय
क्रमांक 1 ग्वालियर

PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA NO. 1 GWALIOR



किसलय
विद्यालय पत्रिका

2025-26

संपादक मंडल / Editorial Board

मुख्य संरक्षक

श्रीमती शाहिदा परवीन
उपायुक्त
के.वि.संगठन भोपाल संभाग

संरक्षक

श्री राजेश पाण्डेय
प्राचार्य
पीएम श्री के.वि.क्र.1, ग्वालियर

सहसंरक्षक

श्री पवन कुमार जैन
उप प्राचार्य
पीएम श्री के.वि.क्र.1, ग्वालियर

प्रधान संपादक

श्री ओम प्रकाश गोस्वामी
पीजीटी (हिंदी)

संपादक

1. श्रीमती वंदना दीपक शुक्ला , पीजीटी (अंग्रेजी)
2. श्री पवन कुमार, पीजीटी (हिंदी)
3. श्रीमती अंजलि सिकरवार पीजीटी (संविदा)
4. श्रीमती सीता सिंह चौहान टीजीटी (हिंदी)
5. डॉ. शेष कुमारी बघेल टीजीटी (हिंदी)
6. श्री महेश कुमार बढ़ई टीजीटी (अंग्रेजी)
7. श्री अरुण खेवरिया टीजीटी (अंग्रेजी)
8. श्रीमती शालु अग्रवाल टीजीटी (अंग्रेजी)
9. श्री सोमेश्वर टीजीटी (संस्कृत)
10. श्री देवेन्द्र कुमार लवानिया टीजीटी (संस्कृत)
11. श्रीमती विजयता जादौन टीजीटी (हिंदी)
12. श्रीमती उर्वशी बधाला टीजीटी (अंग्रेजी)
13. श्री राधेश्याम नंदवानिया टीजीटी (हिंदी)

साज-सज्जा एवं कवर

1. श्री राजीव कुमार गुप्ता कला शिक्षक
2. श्री प्रमोद सिंह कंप्यूटर अनुदेशक (संविदा)

विद्यार्थी संपादक

1. ऋषित सलया 12 अ
2. अंशिका मावई 12 स

संपादक मंडल / Editorial Board



अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना / गतिविधि	द्वारा	पृष्ठ संख्या
1	संदेश	अध्यक्ष, वि.प्र.समिति	8
2	संदेश	उपायुक्त ,के.वि.संगठन भोपाल संभाग	9
3	संदेश	प्राचार्य	10
4	संदेश	उपप्राचार्य	11
5	संदेश	संपादक	12
6	विद्यालय के सितारे... STARS OF SCHOOL	.....	13
7	वृक्षारोपण /TREE PLANTATION	.....	14
8	प्रार्थना सभा कार्यक्रम-गतिविधियाँ	.....	15
9	महिला दिवस समारोह	.....	16
10	योग दिवस	.....	17
11	नई पीढ़ी का नया जोश...	शिवन्या गहोई कक्षा-7 अ	18
12	स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण :एक दूसरे के पूरक	संदीप क्षात्रे कक्षा-10 अ	19
13	स्क्रीन के पीछे की दुनिया	अमन अहमद कक्षा-10 ब	20
14	शादी की शान के पीछे भोजन की बर्बादी :एक गंभीर चुनौती	अनुश्री परिहार कक्षा-10 ब	21
15	उड़ान...	निधि बाजपेयी कक्षा-10 ई	21
16	प्राथमिक विभाग क्रियाकलाप	.....	22-25
17	खेल योग प्राथमिक विभाग	.....	26
18	जम्मू - कश्मीर की यादगार यात्रा	जीविका सिंह कक्षा-10 ई	27
19	नकल का परिणाम	शीतल कक्षा-9 अ	27
20	मैं कवि नहीं, कविता हूँ...	सानवी कक्षा-9 अ	28
21	हमारे प्रिंसिपल सर...	श्रेष्ठी भदौरिया कक्षा-9 अ	28
22	आदर्श पुत्र- पुत्री : घर की शान	लावण्या गोडिया कक्षा-7 ई	29
23	मेरी शिमला यात्रा...	अनमोल सिंह कक्षा-6 स	30
24	प्रकृति का संदेश....	गायत्री धाकड़ कक्षा-7 स	30
25	मेरे सपनों की उड़ान..	वेद शिवहरे कक्षा-6 द	31
26	वह किसान...	भार्वि शाह कक्षा-11 ब	31

क्र.सं.	रचना / गतिविधि	द्वारा	पृष्ठ संख्या
27	शिक्षक दिवस समारोह	.....	32
28	हिंदी पखवाड़ा समारोह	.....	33
29	भारत स्काउट-गाइड क्रियाकलाप	.....	34
30	खेल दिवस समारोह	.....	35
31	कला उत्सव	.....	36
32	मेरी उड़ान...	अर्नव जैन कक्षा-10 स	37
33	मेरी प्यारी हिंदी...	शिवांग शर्मा कक्षा-8 अ	37
34	प्यारा-सा मेरा विद्यालय...	हितिका शिवहरे कक्षा-8 अ	38
35	मेरी ताजमहल यात्रा ...	विधि शिवहरे कक्षा-6 द	38
36	खुद को कमजोर मत समझो...	भार्गवी कौरव कक्षा-6 द	39
37	हिंदी का महत्त्व....	ईशिका कौशिक कक्षा-10 अ	40
38	हिंदी दिवस	परी जाटव कक्षा-9 स	40
39	मेरा प्यारा भारत...	अथर्व गहोई कक्षा-9 स	41
40	मैं कर सकती हूँ...	नव्या सिंह कक्षा-11 ब	42
41	हिंदी भाषा की अपनी ही कहानी है...	कार्तिक उपाध्याय कक्षा-10 स	43
42	मेहनत का फल....	कार्तिक उपाध्याय कक्षा-10 स	43
43	मेरी पचमढ़ी यात्रा...	प्रशस्ति रायकवार कक्षा-10 स	44
44	प्रकृति मुस्कुराए...	खुशी कुमारी कक्षा-12 द	45
45	मैं क्या चाहती हूँ....	खुशी कक्षा-12 द	46
46	माँ...	कृष्णा उपमन्यु कक्षा-12 द	46
47	मेरी केदार यात्रा...	अभिलाष चक्रवर्ती कक्षा-11 ई	47
48	समय का सदुपयोग...	अनुराग गोस्वामी कक्षा-8 अ	48
49	बड़ी बेटियाँ....	कामना कक्षा-10 ई	49
50	मेरी सफलता...	गार्गी यादव कक्षा-6 ई	49
51	आदर्श विद्यार्थी...	फाल्गुनी शर्मा कक्षा-6 ई	50
52	हिंदी पहेलियाँ	खुशी गुर्जर कक्षा-6 ई	50
53	अभी राह बाकी है....	रितिका कक्षा-9 अ	51
54	कब से तन्हा हूँ...	विजयता जादौन टी.जी.टी. हिंदी	52
55	स्वच्छता की शुरुआत...	राकेश कुमार टी.जी.टी. सा.अ.	53
56	अंग्रेजी की शिक्षिका...	अंजली सिकरवार सं. शि.अंग्रेजी	54
57	मैं हारा नहीं था, बस मुझे रास्ता चाहिए था....	हेमेन्द्र सिंह यादव टी.जी.टी. विज्ञान	55

क्र.सं.	रचना / गतिविधि	द्वारा	पृष्ठ संख्या
58	हिंदी...	सीता सिंह चौहान टी.जी.टी. हिंदी	56
59	सपने...	संतोष मिश्रा टी.जी.टी. सा.वि.	57
60.	कर्म-फल....	ओम प्रकाश गिरी गोस्वामी	58
61	गढ़ते नागरिक....	डॉ.भारती यादव प्रधानाध्यापिका	59-61
62	शिक्षा का पावन वटवृक्ष-संघर्ष, संकल्प और सर्वांगीण उत्थान...	श्री पवन कुमार जैन उपप्राचार्य	62-64
63	पश्य बाल...	उमंग सिहं कक्षा-8 स	65
64	भाषाया: गौरवम्	लक्षिता राठौड़ कक्षा-8 स	65
65	प्रकृति: अस्माकम् जीवनम्	कार्तिकेय त्यागी कक्षा-8 ई	66
66	हास्य कणिका:	एकता शर्मा कक्षा-8 ई	66
67	मुंशी प्रेमचंदस्य परिचय:	भक्ति कक्षा-8 ई	67
68	योगस्य महत्त्वम्	स्वाति कक्षा-8 ई	67
69	वृक्षस्य पुकार:	अंश शर्मा कक्षा-7 द	68
70	उद्यम-अनुशासन-वैभवम्	गार्गी सारस्वत कक्षा-8 ई	68
71	प्रकृति सौंदर्यम्	करुणा शर्मा कक्षा-8 ई	69
72	संस्कृतम् - महापुरुषाणां विचारा:	गौरांगी शर्मा कक्षा-7 ब	69
73	कला - साधना : जीवनस्य सौन्दर्यम् अस्माकं संस्कृति च	भुवि श्रीवास्तव कक्षा-12 ब	70
74	अहं भारतस्य बालिका अस्मि...	मुस्कान कक्षा-8 स	70
75	B E L I E V E I N Y O U R S E L F	Lavanya Godiya Class-7th E	71
76	Oh Dear Tree...	Aditya Pratap Singh Class-8th B	71
77	STORY: The Room With The Blue Light	Daksh Singh Class-12th A	72
78	Contentment is the greatest wealth	Ayesha Jain Class-7th E	73
79	TECHNOLOGY - A TOOL OR A MASTER?	Anveshna Sharma Class-8th B	74
80	The Joy of Reading...	Devansh Dube Class-7th	75
81	Outdoor Games	Madhav Shukla Class-7th E	76
82	Trees	Tarun Narwariya Class-7th E	77
83	A SKY OF MY OWN	Shreshthi Bhadoriya Class-9th A	78
84	T R U E F R I E N D S	Manavi Kumari Meena Class-7th E	79
85	My School	Vaibhav Ratna Class-7th E	80

क्र.सं.	रचना / गतिविधि	द्वारा	पृष्ठ संख्या
86	Story of a Sensitive but Courageous Girl	Suaaliya Uddin Class: 8th B	81
87	Bharat ke Veer	Anusha A.Prabhakar Class: 8th B	82
88	Defining life	Astha Kushwah Class -11th C	83
89	School memories	Khushi Sharam 12 D	84
90	The Minute Between	Devyani Class -11th D	85
91	From the future	Aarohi Singh Clas-11th D	86
92	From Kirana to Cart	Atharv Kumar Clas-11th D	87-88
93	Beyond Every Name	Kamakhya Agarwal Class-12th E	88-89
94	The Changing Face of Tourism: More Than Just Vacations	Ankush Katroliya Class-12th E	90-91
95	The true spectrum of Humanities: Beyond the Rote-learning myth	Riya Singh Indoriya Class-12th D	92
97	Education Never Gets Wasted	Mohit Lanjewar Clas-11th A	93
98	What if Smart phones Disappeared for a Day?	Surayansh Yadav Clas-11th A	94
99	The Power of Curiosity	Prince Singh Clas-10th D	95
100	India's Youth: The Force Behind Tomorrow	Yashvardhan Singh Class-12th C	96-97
101	Teacher's Day Celebration	Rishit Salya Class-12th A	98
102	The Invisible Sparks: Why the Heart of Teaching Can't Be Measured	Anjali Sikarwar PGT English	99-100
103	PM SHRI KVNO. 1, GWALIOR: A PROFILE	Vandana Deepak Shukla PGT English	101-102
104	के.वि.संगठन स्थापना एवं वार्षिक दिवस समारोह	.....	103
105	.....धन्यवाद.....	.....	104



प्रॉफेसर कल्पना शर्मा
उप कुलपति
लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान,
ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

संदेश/MESSAGE…

It gives me immense pleasure to share my thoughts with the students, teachers, parents and well-wishers of the school through this magazine. A school is not merely a place where knowledge is imparted; it is a nurturing ground where young minds learn to think, create, question, explore and develop the confidence to face the world.

In today's rapidly changing world, academic knowledge alone is not enough. Creativity, critical thinking, communication, collaboration, problem-solving and adaptability have become essential skills for success. The ability to learn continuously, unlearn outdated ideas and acquire new skills will enable our students to respond confidently to the opportunities and challenges of the future.

I encourage our students to remain curious and imaginative. Let them not be afraid of making mistakes, for every mistake can become a stepping stone towards learning and innovation. Technology and Artificial Intelligence are transforming the way we live and work, but human values, empathy, integrity and responsible thinking will always remain the foundation of a meaningful life.

I congratulate the editorial team, teachers and students for their sincere efforts in bringing out this magazine. May it become a vibrant reflection of the creativity, talents and achievements of our young learners.

I wish all our students a joyful journey of learning, creativity and continuous growth. May they become confident, compassionate and capable individuals, ready to contribute positively to an ever-changing world.

With my best wishes for a bright and fulfilling future.

VICE CHANCELLOR

LNIPE GWALIOR

	**श्रीमती शाहिदा परवीन** **उपायुक्त** **केन्द्रीय विद्यालय संगठन** **भोपाल संभाग, भोपाल**

संदेश.....

अत्यंत हर्ष का विषय है कि पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1, ग्वालियर द्वारा अपनी वार्षिक ई-पत्रिका 2025-26 का प्रकाशन करवाया जा रहा है।
शिक्षा सरोकारों की समग्र संभावनाओं से समन्वित बाल कलाकारों एवं सुधी शिक्षकों के भाव एवं विचारों का प्रतिबिंब स्वरूप विद्यालय की वार्षिक ई-पत्रिका आपके समक्ष है।
यह सुविदित है कि किसी भी विद्यालय की पत्रिका उस विद्यालय का दर्पण होती है। जिससे विद्यालय की सांस्कृतिक, शैक्षणिक,खेलकूद एवं विविध रचनात्मक गतिविधियों के साथ-साथ साहित्यिक अभिरुचियों का भी पता चलता है। यह विद्यालय पत्रिका इस बात का प्रमाण है कि शिक्षार्थियों के समुचित सकारात्मक, सर्वांगींण एवं सृजनात्मक विकास हेतु विद्यालय परिवार प्रतिबद्ध है।

पत्रिका प्रकाशन पर मैं उन सभी अभिभावकों ,शिक्षार्थियों ,शिक्षक-शिक्षिकाओं तथा विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों, जिन्होंने पत्रिका हेतु अपनी रचनाएं एवं कलाकृतियॉं प्रकाशनार्थ देकर न सिर्फ इस पत्रिका को सहजनीय बनाया है अपितु सृजनात्मकता को भी प्रोत्साहित किया है, उन सभी के प्रति विनम्र साधुवाद ज्ञापित करती हूँ। पत्रिका के संपादक तथा संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। इस ई-पत्रिका के प्रकाशन से छात्रों में निहित सृजनात्मक प्रतिभा उभर कर सामने आ सकेगी तथा इन्हीं बाल कलाकारों में से भविष्य में कुछ अच्छे चित्रकार, पत्रकार, लेखक व कवि रुप में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब होंगे। यह मेरा सहज विश्वास है।

डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम जी के शब्दों में-

“ सपने वो नहीं, जो आप सोते वक़्त देखते हैं, सपने वो होते हैं, जो आपको सोने नहीं देते। “

हार्दिक शुभकामनाएं.....

(शाहिदा परवीन)
उपायुक्त

प्राचार्य संदेश



प्रिय विद्यार्थियों, सम्मानित अभिभावकों एवं समर्पित शिक्षकों ! यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि हमारा विद्यालय इस वर्ष भी अपनी वार्षिक विद्यालय पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है। यह पत्रिका हमारे विद्यार्थियों की रचनात्मकता, उनकी कल्पना शक्ति और शैक्षणिक उत्कृष्टता का एक जीवंत प्रमाण है।

शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास (Holistic Development) का एक माध्यम है। हमारे विद्यालय का हमेशा से यह प्रयास रहा है कि हम बच्चों को एक ऐसा मंच प्रदान करें जहाँ वे अपनी छिपी हुई प्रतिभाओं—चाहे वह लेखन, कला, खेल या अन्य गतिविधियाँ हों—को खुलकर व्यक्त कर सकें। यह पत्रिका उसी दिशा में हमारे बच्चों के प्रयासों का एक सुंदर परिणाम है।

आज का यह समय तकनीकी प्रगति और डिजिटल क्रांति का है, जिसने हमारे जीवन को आसान तो बनाया है, परंतु इसके साथ ही विद्यार्थियों के जीवन में कुछ नई चुनौतियाँ भी खड़ी की हैं। आज तकनीक के अत्यधिक उपयोग के कारण विद्यार्थियों में एकाग्रता की कमी, समय का प्रबंधन और अनुशासन से जुड़ी समस्याएँ तेजी से देखने को मिल रही हैं।

एक शिक्षक और प्राचार्य के रूप में मैं यह समझता हूँ कि तकनीक एक बेहतरीन साधन है, लेकिन यह कभी भी अनुशासन और मानवीय मूल्यों का विकल्प नहीं बन सकती। हम सबका यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि हम तकनीक का सकारात्मक उपयोग करें, न कि इसके गुलाम बनें। अनुशासन किसी पर थोपी हुई पाबंदी नहीं है, बल्कि यह वह आंतरिक शक्ति है जो हमारे जीवन को एक सही दिशा और उद्देश्य देती है। सही समय पर सोना, पढ़ना, खेलना और अपने बड़ों व शिक्षकों का आदर करना—यही सच्चे अनुशासन की पहचान है।

विद्यार्थियों के लिए मेरा यही संदेश है कि

आप सभी में असीम संभावनाएँ हैं। असफलता से डरे बिना हमेशा कुछ नया सीखने का प्रयास करें। डिजिटल दुनिया की चकाचौंध से थोड़ा समय निकालकर अपनी किताबों, खेल के मैदान और अपनों के साथ संवाद से जुड़ें। अपनी जिज्ञासा को जीवित रखें और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ें। यह पत्रिका आपके विचारों की उड़ान की गवाह है, इसे पढ़कर मुझे गर्व महसूस होता है।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए पत्रिका प्रकाशन समिति, सभी शिक्षकों और विशेषकर हमारे प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देता हूँ, जिन्होंने अपने कठिन परिश्रम से इसे संभव बनाया है। आपके उज्ज्वल भविष्य और अनुशासित जीवन के लिए ढेरों शुभकामनाएँ!

(राजेश पांडे)
प्राचार्य

उप प्राचार्य संदेश



प्रिय विद्यार्थियों !

समय के साथ हर व्यक्ति के जीवन में ऐसे क्षण आते हैं, जो अवसर बनकर हमारी प्रगति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। जीवन की असली परीक्षा इसी बात में है कि आप उचित और अनुचित, उपयुक्त और अनुपयुक्त के सूक्ष्म अंतर को कितनी सजगता और विवेक से पहचानते हैं। जिन्होंने इस निर्णय-क्षमता को अपना लिया, उन्होंने न केवल आर्थिक स्वावलंबन हासिल किया, बल्कि शिक्षा और समाज के हर क्षेत्र में सर्वोच्च प्रतिष्ठा अर्जित की है।

शिक्षा केवल एक डिग्री या अंकपत्र प्राप्त करने का साधन नहीं है; यह आपकी व्यक्तिगत उन्नति का मूल आधार है। जब आप शिक्षित और जागरूक बनते हैं, तो आप केवल अपने सपनों को साकार नहीं करते, बल्कि अपने परिवार और संपूर्ण समाज के लिए एक सुदृढ़ और विश्वसनीय संबल (सहारा) भी बनते हैं।

एक सच्चे शिक्षार्थी के रूप में, शिक्षा आपको निम्नलिखित अमूल्य क्षमताएँ प्रदान करती है:

सृजनात्मकता (Creativity): नवीन दृष्टिकोण से सोचना और मौलिक विचारों को जन्म देना।

विचारशीलता व तार्किक क्षमता (Critical Thinking & Logic): सत्य-असत्य की कसौटी पर हर तथ्य को परखना और विवेकपूर्ण निर्णय लेना।

तकनीकी कुशलता (Technical Proficiency): आधुनिक युग में तकनीक का सजग और रचनात्मक प्रयोग कर जीवन को सुगम बनाना।

अवसर सदैव आपकी राह देख रहे हैं। अपनी अंतर्निहित क्षमताओं को पहचानिए, अपने विचारों को नई धार दीजिए और विवेक के साथ निरंतर आगे बढ़िए। आपकी आज की लगन और अनुशासन ही आपके और इस समाज के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करेगी।

(पवन कुमार जैन)
उपप्राचार्य

संपादक

की कलम से.....



विद्यालय पत्रिका शिक्षण एवं शिक्षणेतर विद्यालयी क्रियाकलापों का प्रतिबिंब होती है,जिससे विद्यार्थियों की शारीरिक एवं मानसिक दक्षताओं का पता चलता है। विद्यालय पत्रिका का उद्देश्य विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति, सृजनात्मकता एवं संवेदनशीलता के भाव का विकास कर उनको समुचित दिशा प्रदान करते हुए समाज का आदर्श नागरिक बनाना है।

प्रस्तुत पत्रिका में विद्यार्थियों ने हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा में साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे कि कहानी, कविता, अनुच्छेद, यात्रा साहित्य, पर्यावरण परक लेख रचना द्वारा रचनात्मकता का परिचय दिया है, जिनसे सहयोग, सम्मान, स्नेह, सत्य, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, एकता, अखंडता, करुणा, अहिंसा, भाईचारा एवं देश प्रेम की भावना का संदेश मिलता है।

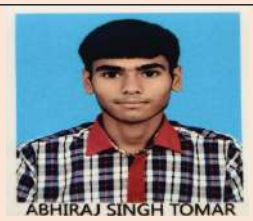
मैं सुधी पाठकों से अनुरोध करना चाहूँगा कि रचनाओं को पढ़कर उनमें निहित संवेदनाओं को अंगीकार करते हुए त्रुटियों को नजरअंदाज कर बाल कलाकारों को अपना शुभाशीष प्रदान करें।

अंत में प्राचार्य महोदय श्री राजेश पाण्डे जी का हार्दिक साधुवाद करता हूँ, जिनका समय-समय पर समुचित मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा। समुचित सहयोग हेतु समादरणीय उपप्राचार्य महोदय श्री पवन कुमार जैन जी का आभार व्यक्त करता हूँ। संपादक मंडल एवं सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं का धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ, जिनके अथक प्रयास एवं परिश्रम से विद्यालय ई-पत्रिका प्रकाशन कार्य समय पर संभव हो सका।

सभी बाल कलाकारों का हार्दिक आभार, अभिनंदन !

ओम प्रकाश गोस्वामी
स्नात्तकोत्तर शिक्षक
(हिन्दी)

विद्यालय के सितारे... STARS OF SCHOOL

			
गौरव सिंह भदौरिया XIIA 479/500 95.8%	आरुषा सक्सेना XIIB 450/500 90%	उज्ज्वल सिंह XIIA 445/500 89%	
			
अंशिता चतुर्वेदी XIIC 463/500 92.6%	मृनालिनी महोविया XIIC 461/500 92.2%	वैष्णवी माथुर XIIC 443/500 88.6%	
			
तमन्ना XIID 482/500 96.4%	आनंदी गौड़ XIID 470/500 94%	शिवानी XIID 469/500 93.2%	ऋतु जादौन XIID 469/500 93.2%
			
अभिराज सिंह तोमर XIIE 365/500 73	गौरांश मिश्रा XIIE 365/500 73	अंजलि प्रताप सिंह XIIE 329/500 65.8	
			
मोहित लांजीवार X 481/500 96.2%	यशी तिवारी X 480/500 96%	पलाक्षी सारस्वत X 476/500 95.2%	

वृक्षारोपण /TREE PLANTATION













प्रार्थना सभा कार्यक्रम













महिला दिवस समारोह/WOMENS DAY CELEBRATION









योग दिवस समारोह / YOGA DAY CELEBRATIONS



नई पीढ़ी का नया जोश...



पीढ़ी दर पीढ़ी समाज में एक अंतर देखने को मिलता है, जिसका मुख्य कारण सोच का बदलाव है। युवा पीढ़ी वर्तमान परिस्थितियों और आधुनिक टैक्नोलॉजी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलती है, जबकि पुरानी पीढ़ी टैक्नोलॉजी को अपनाने में थोड़ा समय लेती है। नई पीढ़ी नए ज़माने के दृष्टिकोण से सोचती है, वहीं पुरानी पीढ़ी अपने अनुभवों और परंपराओं को ध्यान में रखकर आगे बढ़ती है। सोच के इसी अंतर को 'जनरेशन गैप' या 'पीढ़ियों का अंतर' कहा जाता है।

आज के बच्चे बहुत छोटी उम्र में ही मोबाइल, टीवी, इंटरनेट जैसी आधुनिक टैक्नोलॉजी का न केवल बखूबी उपयोग करते हैं, बल्कि यह उनके दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। अब संदेश भेजना हो, कोई याद रिकॉर्ड करनी हो, फोटोग्राफी करनी हो या वीडियो बनाना हो, इसके लिए अलग से महंगे कैमरों की आवश्यकता नहीं है; सब कुछ मोबाइल में ही उपलब्ध है। यहाँ तक कि शिक्षा भी अब घर बैठे मोबाइल के माध्यम से सुलभ हो गई है।

परंतु इस सिक्के का दूसरा पहलू भी है। अत्यधिक निर्भरता के कारण हमारी युवा पीढ़ी इसकी आदी होती जा रही है। इसका प्रभाव उनके सामाजिक ताने-बाने पर पड़ा है। युवाओं में सहनशीलता और धैर्य की कमी देखी जा रही है, जिससे वे छोटी-छोटी बातों पर गुस्सैल हो जाते हैं और मानसिक तनाव (डिप्रेशन) का शिकार होने लगते हैं। मानवीय रिश्तों में सम्मान और समर्पण का भाव भी धीरे-धीरे कम हो रहा है।

इन चुनौतियों के बावजूद आज की युवा पीढ़ी पहले से कहीं अधिक जागरूक और सक्रिय है। उनके अंदर एक नया उत्साह और जोश है। वे वयस्क होने से पहले ही एक सशक्त सामाजिक ऊर्जा के रूप में उभर रहे हैं और विभिन्न सामाजिक व पर्यावरणीय आंदोलनों में अपनी सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं। आज इस नई पीढ़ी को 'जेन ज़ी (Gen Z) या 'जेन अल्फा' (Gen Alpha) के नाम से जाना जाता है। यही इस नई पीढ़ी का असली और नया जोश है।

शिवन्या गहोई
कक्षा-7वीं 'अ'

स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण : एक दूसरे के पूरक



"स्वच्छता को अपनाएंगे, पर्यावरण को बचाएंगे।
मिलकर चलेंगे साथ, तभी बनेगी बात ॥"

'स्वच्छता' और 'पर्यावरण संरक्षण' मानव जीवन के दो ऐसे मुख्य स्तंभ हैं, जिन्हें एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। साधारण शब्दों में स्वच्छता हमारे आसपास के परिवेश को साफ-सुथरा रखने की प्रक्रिया है, जबकि पर्यावरण संरक्षण प्रकृति के घटक जैसे वायु, जल, भूमि और जंगल को दूषित होने से बचने का व्यापक संकल्प है। ये दोनों अवधारणाएँ गहराई से जुड़ी हुई है लेकिन व्यावहारिक रूप से एक दूसरे की पूरक है।

पर्यावरण संरक्षण की पहली सीढ़ी तब शुरू होती है जब हम अपने घर या मोहल्ले में स्वच्छता बनाए रखते हैं। इससे हम अनजाने में ही सही पर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में पहला कदम बढ़ा तो रहे होते हैं। दरअसल पर्यावरण संरक्षण स्वच्छता की सीमा को व्यक्तिगत स्तर से उठाकर वैश्विक स्तर पर ले जाता है। यदि हम नदियों और तालाबों को साफ रखते हैं तो यह जल की स्वच्छता सुनिश्चित करता है। एक संरक्षित पर्यावरण ही इंसानों को स्वच्छ हवा, साफ पानी और उपजाऊ मिट्टी प्रदान कर सकता है।

"सच्ची स्वच्छता तभी संभव है जब पर्यावरण सुरक्षित हो, पर्यावरण तभी सुरक्षित रह सकता जब चारों ओर स्वच्छता हो।"

'स्वच्छ भारत अभियान' जैसी पहल केवल सड़कों को साफ करने तक सीमित नहीं है, बल्कि उनका अंतिम लक्ष्य पर्यावरण को नई ज़िंदगी देना है। हमें यह समझना होगा कि पृथ्वी हमारा एकमात्र घर है। यदि हम आने वाली पीढ़ियों को एक स्वस्थ भविष्य देना चाहते हैं तो हमें स्वच्छता को अपनी दैनिक आदत बनाना होगा और पर्यावरण संरक्षण को अपना परम कर्तव्य।

"स्वच्छ देश, हरित प्रदेश, यही है हमारा संकल्प विशेष।"

संदीप छात्रे
कक्षा-10 वीं 'ब'

स्क्रीन के पीछे की दुनिया...



आज हमारी सुबह अलार्म की आवाज से नहीं, बल्कि मोबाइल की स्क्रीन से शुरू होती है। आँख खुलते ही हम फोन देखते हैं। किसका संदेश आया ? किसने पोस्ट की ? कौन-सी नई वीडियो आई ? कुछ मिनटों के लिए उठाया गया फोन कब घंटों में बदल जाता है, पता ही नहीं चलता।

तकनीकी ने हमारी ज़िंदगी को आसान और सुविधाजनक बना दिया है। आज हम घर बैठे दुनिया के किसी भी कोने की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। ऑनलाइन पढ़ाई, डिजिटल भुगतान, वीडियो कॉल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और इंटरनेट ने हमारे काम करने और सीखने के तरीकों को बदल दिया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि तकनीकी मानव बुद्धि की एक अद्भुत उपलब्धि है। लेकिन एक सवाल हमारे सामने खड़ा है - क्या हम तकनीकी का उपयोग कर रहे हैं या धीरे धीरे तकनीकी हमारे समय, ध्यान और आदतों को नियंत्रित करने लगी हैं

हम कहते हैं कि हम जब चाहें मोबाइल चला सकते है लेकिन अक्सर ऐसा होता है कि हम मोबाइल रखने का निर्णय लेते हैं और कुछ ही मिनट बाद फिर स्क्रीन खोल लेते हैं। एक वीडियों खत्म होती है तो दूसरी अपने-आप सामने आ जाती है। एक संदेश का जवाब देते-देते हम कई दूसरी चीजों में उलझ जाते है। धीरे-धीरे हमारा ध्यान छोटी-छोटी चीजों में बटने लगता है।

सबसे बड़ी चुनौती केवल स्क्रीन का बढ़ता समय नहीं बल्कि हमारा घटता हुआ वास्तविक जीवन है। कभी परिवार के साथ बैठकर बातचीत करना सामान्य था, आज कई बार एक ही कमरे मे बैठें लोग अलग अलग स्क्रीन में व्यस्त दिखाई देते हैं। खेल के मैदान की जगह मोबाइल गेम, किताबों की जगह लगातार स्क्रॉलिंग और आमने-सामने की बातचीत की जगह चैट ने ले ली है। फिर भी समस्या तकनीकी नहीं, समस्या उसका असंतुलित उपयोग है। जिस मोबाइल से हम मनोरंजन कर सकते हैं,उसी से ज्ञान भी प्राप्त कर सकते है। जिस इंटरनेट पर हम समय वर्बाद कर सकते है,उसी इंटरनेट से कोई विद्यार्थी नई भाषा सीख सकता है,किसी विषय को समझ सकता है या अपनी प्रतिभा दुनिया के सामने रख सकता है। इसलिए हमें तकनीकी से दूरी बनाने की नहीं बल्कि तकनीकी के साथ संतुलन बनाने की जरूरत है।

हमें स्वयं से कुछ छोटे-छोटे प्रश्न पूछने चाहिए-

- क्या मैं फोन इसलिए उठा रहा हूँ क्योकि मुझे वास्तव में उसकी जरूरत है?
- क्या मैं अपनी पढ़ाई के समय सचमुच पढ़ रहा हूँ?
- क्या मैं परिवार और दोस्तों के लिए पर्याप्त समय निकाल रहा हूँ।
- क्या मैं स्क्रीन का उपयोग कर रहा हूँ या स्क्रीन मेरा समय बर्बाद रही है?

तकनीकी हमारे हाथ में एक शक्तिशाली साधन है। उसका उपयोग हमें आगे ले जा सकता है लेकिन उसका अनियंत्रित उपयोग हमें अपने ही समय से दूर कर सकता है। भविष्य उस व्यक्ति का नहीं होगा जिसके पास महँगा फोन होगा बल्कि उस व्यक्ति का होगा जो तकनीकी का सबसे समझदारी से उपयोग करना जानता होगा।

आइए ! हम स्क्रीन को अपना मालिक नहीं, अपना समझदार साथी बनाएँ क्योंकि असली दुनिया स्क्रीन के पीछे नही, स्क्रीन के बाहर हमारा इंतजार कर रही है।

अमन अहमद
कक्षा-10 वीं 'ब'

शादी की शान के पीछे भोजन की बर्बादी : एक गंभीर चुनौती



"शादी की रौनक में भोजन की बर्बादी एक गंभीर समस्या है।" भारत में शादियाँ अपनी भव्यता, रंग-बिरंगे समारोहों और स्वादिष्ट व्यंजनों के लिए प्रसिद्ध हैं। आजकल शादियों में मेहमानों के लिए अनेक प्रकार के व्यंजन बनाए जाते हैं। मेजबान अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए आवश्यकता से अधिक भोजन तैयार करवाते है। इसका परिणाम यह होता है कि बड़ी मात्रा में भोजन बच जाता है और अंततः कूड़ेदान में चला जाता है।

भोजन की बर्बादी का एक बड़ा कारण दिखावे की प्रवृत्ति है। लोग चाहते हैं कि उनकी शादी में खाने की कमी न हो, इसलिए कई तरह के पकवान बनाए जाते हैं, दूसरी ओर कुछ मेहमान प्लेट में जरूरत से अधिक भोजन ले लेते हैं और पूरा न खाने पर उसे फेंक देते हैं। कई बार बचा हुआ भोजन सही समय पर जरूरतमंद लोगों तक नहीं पहुँच पाता। हमें समझना चाहिए कि भोजन केवल एक वस्तु नहीं, बल्कि किसानों की मेहनत, पानी, ऊर्जा और समय का परिणाम है। भारत जैसे देश में, जहाँ आज भी अनेक लोग पर्याप्त भोजन के लिए संघर्ष करते हैं, यह समस्या और भी गंभीर हैं।

इस समस्या का समाधान हमारी छोटी-छोटी आदतों में छिपा हुआ है। शादी में मेहमानों की संख्या के अनुसार ही भोजन तैयार होना चाहिए। हमें अपनी प्लेट में उतना ही भोजन लेना चाहिए जितना हम खा सकें। बचा हुआ भोजन जरूरतमंद लोगों तक पहुँचाना चाहिए।

अंततः शादी की असली शान भोजन की अधिकता में नहीं, बल्कि भोजन के सम्मान में है। हमें संकल्प लेना चाहिए " जितना चाहिए, उतना ही लेंगे और अन्न का एक दाना भी व्यर्थ नहीं जाने देंगे।"

अनुश्री परिहार
कक्षा-10 वीं 'ब'

उडान...



असमान छूने का सपना, आंखों में सजाये रखें।

मुश्किल चाहे जितनी आएं कदम आगे बढाए रखें।

पर्वत - सा अडिग हो मन, सागर सा गहरा विश्वास,

मेहनत को अपना साथी बनाकर, रच दें अपना इतिहास।

अंधियारें चाहे घेरें, हम दीप जलाते जाएँ,

गिरकर फिर उठते जाएं , हर बाधा को हराएँ।

मंजिल चाहे दूर हो, हौसला कम न होने दें,

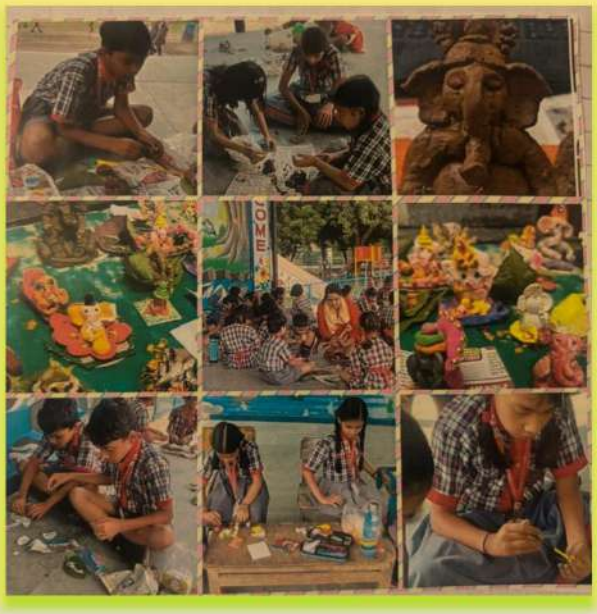
अपने सपनों की उड़ान को कभी थमने न दें।

निधि बाजपेई

कक्षा- 10 'ई'

प्राथमिक विभाग क्रियाकलाप/PRIMARY SECTION ACTIVITY



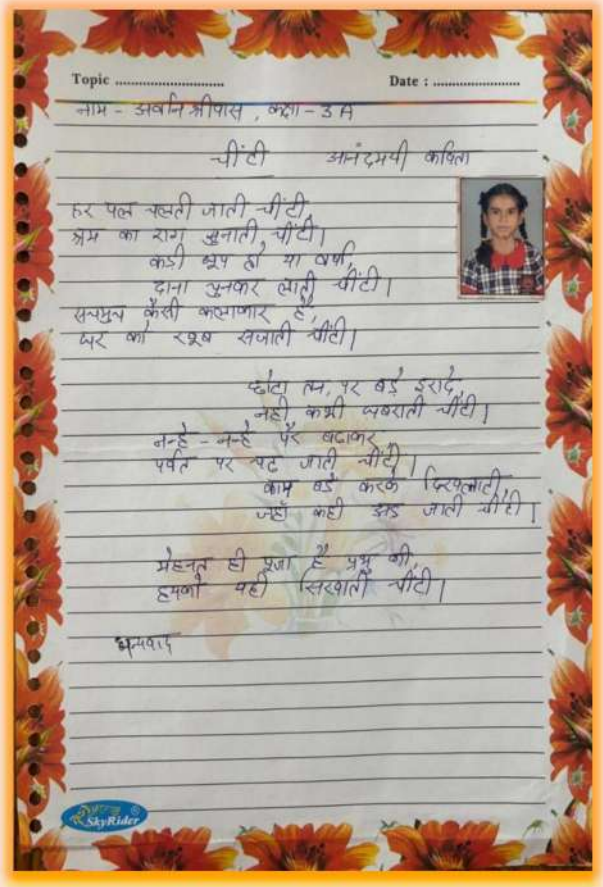








प्राथमिक विभाग क्रियाकलाप/PRIMARY SECTION ACTIVITY



Topic ..... Date : .....

नाम - अवनि श्रीपास , कक्षा - 3 A

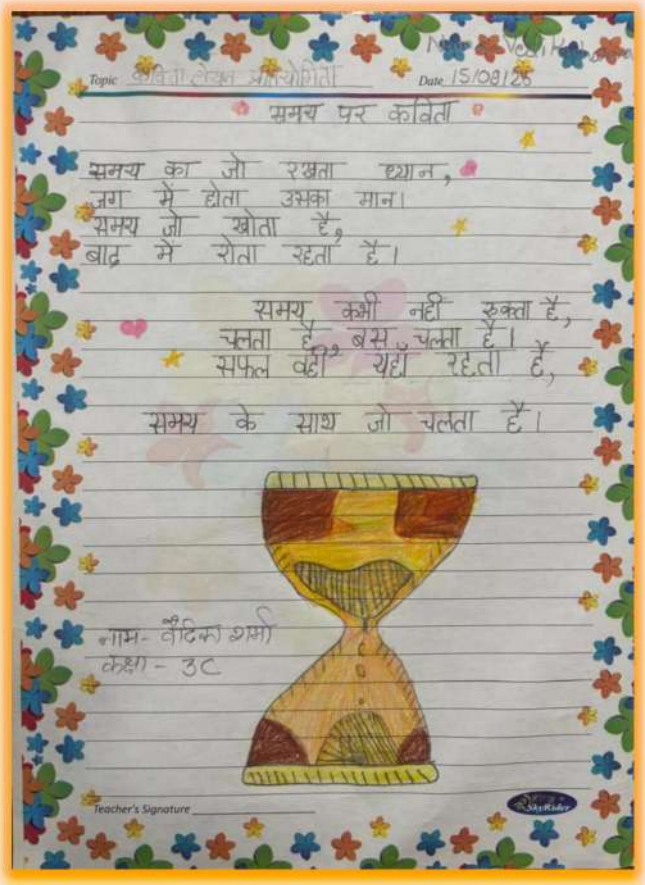
चींटी आनंदमयी कविता

हर पल चलती जाती चींटी,
श्रम का राग सुनाती चींटी।
कड़ी धूप हो या वर्षा,
दाना चुनकर लाती चींटी।
सच्चे मन की कर्मधार है,
घर को स्वर्ग सजाती चींटी।

छोटा तन, पर बड़े इरादे,
नहीं कभी घबराती चींटी।
नन्हे - नन्हे पैर बढ़ाकर,
पर्वत पर चढ़ जाती चींटी।
काम बड़े करके दिखलाती,
जहाँ कहीं इक जाती चींटी।

मेहनत ही पूजा है प्रभु की,
हमको यही सिखाती चींटी।

धन्यवाद



Topic कविता लेखन प्रतियोगिता Date 15/09/25

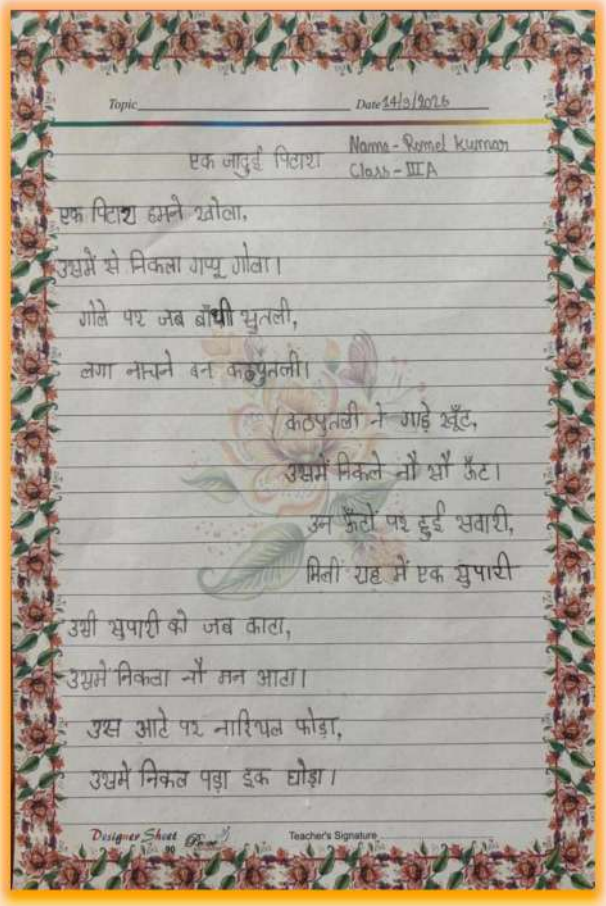
समय पर कविता

समय का जो रखता ध्यान,
जग में होता उसका मान।
समय जो खोता है,
बाद में रोता रहता है।

समय कभी नहीं रुकता है,
चलता है, बस चलता है।
सफल वही यहाँ रहता है,
समय के साथ जो चलता है।

नाम- वैदिका शर्मा
कक्षा - 3C

Teacher's Signature



Topic Date 14/9/2025

एक जादुई पिटारा Name - Romel Kumar Class - III A

एक पिटारा हमने खोला,
उसमें से निकला गप्पू गोला।
गोले पर जब बाँधी पुतली,
लगा नाचने बन कठपुतली।

कठपुतली ने गाड़े खूँट,
उसमें निकले नौ शाही ऊँट।
उन ऊँटों पर हुई सवारी,
मिली राह में एक सुपारी।

उसी सुपारी को जब काटा,
उसमें निकला नौ मन आटा।
उस आटे पर नारियल फोड़ा,
उसमें निकल पड़ा इक घोड़ा।

Designer Sheet

Teacher's Signature

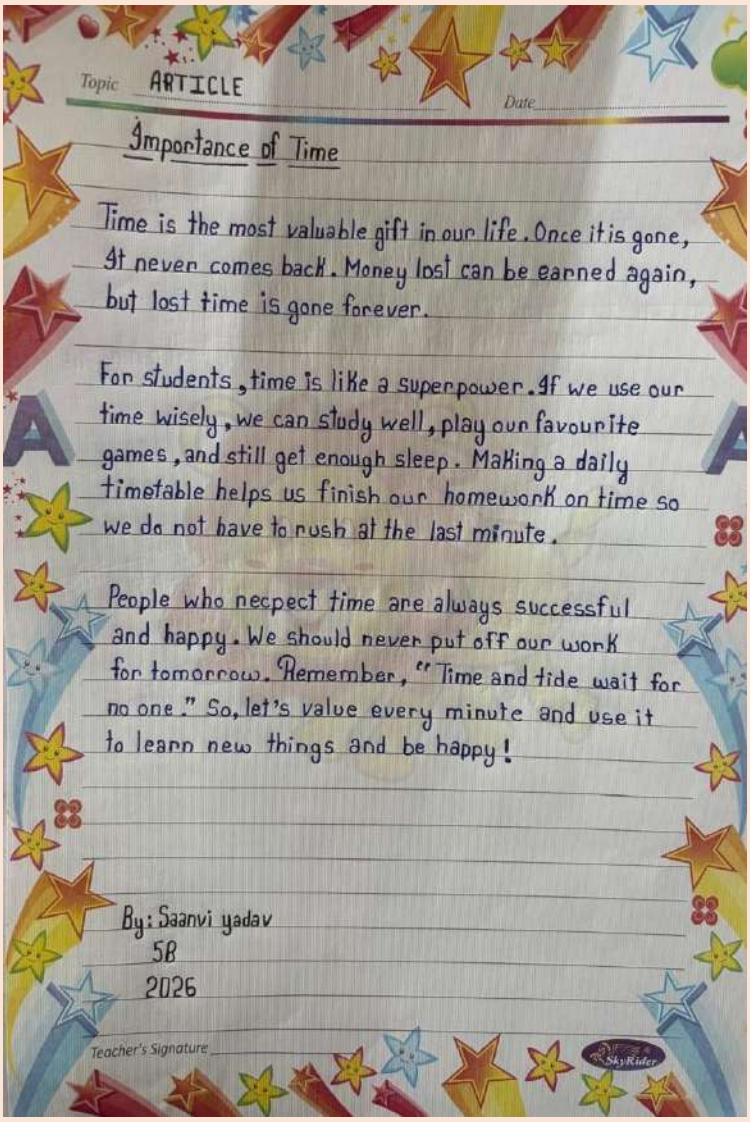


बंदरिया

ठुमक - ठुमक कर चली बंदरिया,
सर पर ओढ़े लाल चुनरिया।
चली पहनकर पीली चोली,
पीछे भागी नटखट टोली।
इसे देखकर मैं घबराई,
दौड़ी ऐसे नज़र न आई।।

नाम → अंशुमान सेंगर
कक्षा → 1st E


प्रवेश उत्सव



Topic ARTICLE

Date

Importance of Time

Time is the most valuable gift in our life. Once it is gone, it never comes back. Money lost can be earned again, but lost time is gone forever.

For students, time is like a superpower. If we use our time wisely, we can study well, play our favourite games, and still get enough sleep. Making a daily timetable helps us finish our homework on time so we do not have to rush at the last minute.

People who respect time are always successful and happy. We should never put off our work for tomorrow. Remember, "Time and tide wait for no one." So, let's value every minute and use it to learn new things and be happy!

By: Saanvi yadav
5B
2026

Teacher's Signature

SkyRider

हिंदी दिवस पर कविता

हिंदी है हमारी पहचान,
इससे मिलता हमें सम्मान।

सरल, सहज मीठी है बोली,
सबका भाती, लगती निराली।

भारत की यह भाषा प्यारी,
संस्कृति की उज्ज्वल धारी।

आओ मिलकर गीत बनाएँ,
हिंदी को हम आगे बढ़ाएँ,
हिंदी से है देश महान।

अलीशा कक्षा- 3 अ





Shivangi- 3 D

खेल योग/Khel Yoga







जम्मू - कश्मीर की यादगार यात्रा...



गर्मियों की छुट्टियों में मैं अपने परिवार के साथ जम्मू- कश्मीर घूमने गई थी। वहाँ की सुंदर वादियाँ, ऊँचे पहाड़ और ठंडी हवाएँ देखकर मेरा मन बहुत खुश हो गया। हमने श्रीनगर में डल झील की सैर की और शिकारे की सवारी भी की। चारों ओर बर्फ से ढके पहाड़ बहुत सुंदर लग रहे थे।

वहाँ का शांत वातावरण और प्राकृतिक सुंदरता मुझे बहुत पसंद आई। यह यात्रा मेरे लिए बहुत ही यादगार रही। मुझे ऐसा लगा जैसे ,मैं जम्मू-कश्मीर की इस सुंदर यात्रा को हमेशा याद रखूँगी।

वहाँ की बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ और हरी-भरी बादियाँ देखकर मैं मंत्रमुग्ध हो गई। सुबह के समय पहाड़ों पर सूरज की किरणें बहुत सुंदर लग रही थीं। मैंने अपने परिवार के साथ वहाँ खूब आनंद लिया।

मेरी यह यात्रा मेरे लिए बहुत ही सुखद, रोमांचक और यादगार रही।

जीविका सिंह

कक्षा-10वीं 'ई'

नकल का परिणाम...



सारा वर्ष पिता ने समझाया,
परन्तु पुत्र की समझ न आया।
मित्रों ने भी कहा पढ़ लो कर लो याद,
बोला कोई नहीं कर लेंगे पर्चिया तैयार।
तभी फ्लाईंग चैक करने आई,
परीक्षा में एक हीं पर्ची थी चलाई।
आखिर पड गया लफड़ा,
वह नकल करते हुए गया पकड़ा।
उठानी पड़ी उसे शर्मिन्दगी समाज में,
फैल चुकी है नकल की गंदगी।
विद्यालय में रो रहा था,
अब नहीं हुआ एडमिशन।
आओ अब मिल कर खाएँ कसम,
मेहनती बनने की चलाए रसम।

शीतल

कक्षा- 9वीं 'अ'

मैं कवि नहीं, कविता हूँ...



मैं अपने जीवन की स्वयं रचयिता हूं।
मैं हर मुश्किल पार कर जाऊँगी।
मैं कवि नहीं, कविता हूँ.....
मैं अपने जीवन की स्वयं रचयिता हूं।
मैं मेहनत कर के दिखाऊँगी,
मैं अपना ज्ञान और बढाऊँगी।

मैं रणभूमि में उतरूंगी,
मैं अपना रणकौशल दिखलाऊँगी।
मैं भारत की बेटी हूं,
मैं कवि नहीं, कविता हूँ।
मैं अपने जीवन की स्वयं रचयिता हूं....

सानवी

कक्षा- 9वीं

हमारे प्रिंसिपल सर...

हम शोर मचाते रहे , आप सब्र सिखाते रहे।
हम गलती करते रहे, आप सही बताते रहे।
हम गलत रस्ते पर थे , आप हमें सही रस्ते पर लाते रहे।
कभी डॉट कर, कभी समझाकर, हमें सिखाते रहे।
हमनें किताबों से ज्यादा, आप से सीखा है।
हर कठिन समय में , भरोसा सीखा है।
हम ये बात दिल से कहते ,
आप जैसे टीचर, हर छात्र की जीत में शामिल रहते।

श्रेष्ठी भदौरिया

कक्षा- 9वीं 'अ'

आदर्श पुत्र- पुत्री : घर की शान



अच्छी संतान वह नहीं जो केवल माता-पिता का नाम रोशन करें, बल्कि वह है जो अपने व्यवहार से इंसानियत का नाम रोशन करे।आदर्श पुत्र या पुत्री बनने का अर्थ केवल अच्छे अंक लाना या हर बात में माता-पिता की हाँ में हाँ मिलाना नहीं है। असली आदर्श संतान वह है जो समझदार जिम्मेदार, विनम्र, और संवेदनशील हो। माता-पिता हमारे जीवन के पहले शिक्षक होते हैं। वे हमे केवल पढ़ाते ही नहीं, बल्कि जीवन जीने का तरीका सिखाते हैं, इसलिये हमारा भी कर्तव्य है कि हम उनके समय, मेहनत, और भावनाओं का सम्मान करें।

एक आदर्श, पुत्र-पुत्री घर के छोटे बड़े काम में खुशी से हाथ बँटाता है। अपनी चीजों की जिम्मेदारी स्वंय लेता है और गलती होने पर उसे छिपाने के बजाय स्वीकार करता है। वह जानता है कि " माफ कीजिए" कहना कमजोरी नहीं, बल्कि अच्छे संस्कार की निशानी है। बच्चों को उम्र के अनुसार छोटी जिम्मेदारियाँ देना उन्हें आत्मनिर्भर और जिम्मेदार बनाती हैं।

आज के समय में आदर्श संतान वह भी है जो माता-पिता की बात सुने और अपनी बात भी सम्मान पूर्वक रखे। यदि किसी बात पर मतभेद हो तो गुस्सा होने की बजाय बातचीत करें, क्योंकि परिवार केवल नियमों से नहीं, बल्कि विश्वास और समझदारी से मजबूत होता है।

हमें यह भी याद रखना चाहिए कि बेटा हो या बेटी, दोनों ही परिवार के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। संतान की पहचान उसके लिंग से नहीं, उसके संस्कार और कर्मों से होती है।

इसलिए हमें बड़े होकर यह सपना नहीं देखना चाहिए कि हम बड़े होकर क्या बनेंगे, बल्कि हमें यह भी सोचना चाहिए कि हम कैसे इंसान बनेंगे, क्योंकि डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक या अधिकारी बनना एक उपलब्धि हो सकती है, लेकिन एक अच्छा इंसान बनना जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

यही है आदर्श पुत्र-पुत्री की असली पहचान जो अपने परिवार का मान बढ़ाए और अपने अच्छे कर्मों से समाज में उजाला फैलाए।

लावण्या गोडिया

कक्षा- 7वीं 'ई'

मेरी शिमला यात्रा.....



मैं अपने परिवार के साथ हर साल गर्मी की छुट्टियों में कहीं न कहीं घूमने जाता हूँ। इस साल हम छुट्टियाँ मनाने शिमला घूमने गए। सब ट्रेन से शिमला पहुंचे। एक होटल में सात दिनों के रहने के लिए दो कमरे बुक किए। होटल में हमने कुछ देर आराम किया, फिर लंच करने के बाद हम शिमला घूमने के लिए चले गए। वहां पर हमने घूमने के लिए एक गाड़ी ली और एक गाइड भी किया।

शिमला हिमाचल प्रदेश की राजधानी है। शिमला बर्फीली पहाड़ियों, प्राकृतिक सुंदरता, हरियाली और खूबसूरत झीलों से घिरी एक खूबसूरत जगह है। यह भारत के आकर्षक पर्यटक स्थलों में से एक है। वहाँ हम रिज ऑफ शिमला, क्राइस्ट चर्च, कुफरी, शिमला मालरोड़, जासू मंदिर, समर हिल्स, टॉय ट्रेन इत्यादि जगहों का भ्रमण किया।

कुफरी की घुड़सवारी और याक की सवारी करने में बहुत मजा आया। शिमला में हर रोज नए-नए स्थानों पर घूमने गए। शिमला में बर्फ़ के गोले बनाकर एक दूसरे पर फेंके।हमने शिमला में अच्छा व स्वादिष्ट खाना खाया। वहाँ पर हमने बहुत सारे कपड़े और सामान भी खरीदा।

शिमला में हमने दूर जगह की सुंदर तस्वीरें खींची। शिमला घूमने में बहुत आनंद आया। इस बार छुट्टियों में घूमने के साथ-साथ शिमला शहर की बहुत सी जानकारी भी मिली। फिर हम अपने घर लौट आए। शिमला शहर की यात्रा हमें हमेशा याद रहेगी।

अनमोल सिंह

कक्षा- 6वीं 'स'

प्रकृति का संदेश....

हँसकर जीना सीखो , यही सिखाता हमको फूल ,

मंजिल पा वही लेते हैं, जो मानते हैं अपनी भूल।

सूरज की किरणें कहती हैं, रोज सुबह जल्दी जागो !

अंधियारे को दूर भगाकर, आगे बढ़ने से मत भागो !

बहती नदियाँ हमें सिखाती, आगे बढ़ते जाना है,

कैसी भी आए बाधा राह में, हँसकर पार लगाना है।

गायत्री धाकड़

कक्षा- 7वीं 'स'



मेरी सपनों की उड़ान...

पानी की लहरें मुझे हर दिन आगे बढ़ना सिखाती हैं। तैराकी मेरे लिए केवल एक खेल नहीं, बल्कि मेरा सपना है। जब मैं पानी में उतरता हूँ, तो मुझे आत्मविश्वास, खुशी और नई ऊर्जा मिलती है। हर दिन का अभ्यास मुझे अपने लक्ष्य के और करीब लाता है। मेरा सपना है एक सफल तैराक बनकर अपने माता-पिता, अपने विद्यालय और अपने देश का नाम रोशन करना। मैं अपनी पढ़ाई के साथ-साथ तैराकी का अभ्यास करता हूं। मेरे माता-पिता का भी मुझे पूरा सहयोग मिलता है।

वेद शिवहरे
कक्षा - 6वीं 'द'

वह किसान



होने से पहले सूर्योदय,
वह खड़ा था अपने खेत में।
करता हुआ सिंचाई अपनी फ़सलों की,
वह निकलता प्रतिदिन भोर में।
बचाने अपनी फ़सलों को भूखी चिड़ियों से,
धीरे-धीरे जब सूरज उसके सर पर आता,
चला जाता वह अपनी झोपड़ी में,
करने थोड़ा आराम और पेट की माँग।
जैसे-जैसे निकट आता समय सूरज के डूबने का,
वैसे ही वह निकलता।
अपने खेत में, पिलाने पानी और बुआई अपनी फ़सलों की।
वह रोज़ करता, ऐसी ही मेहनत।
चाहे दिन हो सोमवार का या रविवार का.....
वह और कोई नहीं, भारत का एक साधारण किसान,
जो भरता है पेट, हम भारतीयों का.....

भारवि शाह
कक्षा-11वीं 'ब'

शिक्षक दिवस समारोह



















हिन्दी पखवाड़ा समारोह











भारत स्काउट-गाइड क्रियाकलाप



















खेल दिवस समारोह / SPORTS DAY CELEBRATION



कला उत्सव/KALA UTSAV











www.naidunia.com

कला उत्सव, छात्रों के विकास





मेरी उड़ान



मेरी इन छोटी आँखों में, एक बड़ा-सा आसमान है,
मुश्किल चाहे जितनी आए, हौसलों में मेरे जान है।

किताबों के इन पन्नों में, मैं अपना कल पढ़ता हूँ,
गलती से जब गिर जाता हूँ, फिर उठकर आगे बढ़ता हूँ।

मैं सूरज बनना नहीं चाहता, बस जुगनू सा रोशन हो जाऊं,
जिस राह से मैं गुजरूँ कभी, उस राह का दीपक बन जाऊँ
।
माँ की आँखों के सपनों को, पापा के विश्वास को पाऊँ,
अपने छोटे-छोटे कर्मों से, देश का नाम बढ़ा पाऊँ।

कल की चिंता छोड़कर अब, आज को बेहतर करना है,
हार मिले तो सीख बनाकर, जीत की ओर ही बढ़ना है।

एक दिन जब पीछे मुड़कर, अपने जीवन को देखूँगा,
कह सकूँगा गर्व से तब—
"मैं खुद अपनी उड़ान था और खुद ही अपना आसमान था।"

अर्नव जैन
कक्षा-10वीं 'स'

मेरी प्यारी हिंदी...



अक्षरों का श्रृंगार हूँ मैं, भावों की पहचान हूँ,
माँ भारती की गोद में खिली, उस ममता की जान हूँ।
वेदों से लेकर किताबों तक, जिसका हर पन्ना महान,
पूरी दुनिया में गूँजती है जिसकी शान।
तुलसी के दोहे जैसी, कबीर की बानी का ज्ञान,
मीरा के गीतों में झलके, मोहन की मधुर मुस्कान।
भारत माँ के माथे पर सजता, ये प्यारा सा अभिमान,
आओ मिलकर कसम ये खाएँ, बढ़ाएँगे हिंदी का मान।
जब तक सूरज-चाँद गगन में, इसका तेज रहेगा अमर,
हिंदी से ही जगमग होगा, भारत का हर एक शिखर।

शिवांग शर्मा
कक्षा- 8 'अ'

प्यारा सा मेरा विद्यालय....

सुबह की घंटी जब बजती है,
चेहरे पर एक रौनक सजती है।
कंधे पर बस्ता, हाथों में किताब,
आँखों में लेकर सुनहरे ख्वाब।

ज्ञान का सागर है यह आँगन,
जहाँ महकता है हर एक बचपन।
गुरुओं का यहाँ मिलता है दुलार,
जो सिखाते हैं हमें अच्छे संस्कार।

कभी डाँट में भी छुपा होता प्यार,
सच्ची दोस्ती का है यह संसार।
लंच बॉक्स का मिलकर खाना,
याद आएगा हमेशा यह ज़माना।

पढ़-लिखकर हम जग चमकाएँगे,
अपने स्कूल का नाम बढ़ाएँगे।
यही है वो पावन मंदिर हमारा,
जहाँ सजता है भविष्य हमारा।

हितिका शिवहरे
कक्षा 8वीं 'अ'

मेरी ताजमहल यात्रा...



पिछले महीने मुझे अपने परिवार के साथ ताजमहल देखने का मौका मिला। सफेद संगमरमर से बनी इस भव्य इमारत को सामने से देखकर मैं हैरान रह गयी। सूरज की रोशनी में ताजमहल का चमकना और सामने बहती यमुना नदी का नजारा बेहद खूबसूरत था। वहाँ हमने इसके इतिहास को जाना और ढेर सारी तस्वीरें खींची।
वहाँ खड़े गाइड ने हमें ताजमहल के इतिहास की पूरी कहानी बताई। जैसे - ताजमहल "शाहजहाँ" ने उसकी प्रिय पत्नी "मुमताज" के लिए बनवाया और ताजमहल दुनिया के सात अजूबों में से एक है। हमें गाइड ने यह भी बताया की ताजमहल में राजस्थान का सफेद संगमरमर, अफगानिस्तान का लाजवर्द, तिब्बत का फिरोजा, पंजाब का यशब, यमन का अकीक, अरब सागर का मूंगा और श्रीलंका का नीलम जैसे संगमरमर इस्तेमाल किए गए हैं। मुझे यह यात्रा हमेशा याद रहेगी।

विधि शिवहरे
कक्षा - 6वीं 'द'

खुद को कमजोर मत समझो...



ये कहानी पुराने जमाने की है। एक किसान था जो रोज सुबह-सुबह अपने कंधे पर एक डंडा रखता और उस डंडे पर दो घड़े लटका लेता। तालाब से पानी भरकर अपने घर तक लाता। यही उसका रोज का काम था। अब बात ये थी कि वो दोनों घड़े काफी पुराने हो चुके थे और उनमें से एक घड़ा फूट गया था। जब किसान पानी भरता तो उस फूटे घड़े में से पानी रिसने लगता। किसान जब घर पहुँचता तो दो घड़े पानी की जगह सिर्फ डेढ़ घड़ा पानी ही पहुँच पाता।

जो घड़ा सही था उसे इस बात पर बहुत घमंड था। वह अक्सर उस फूटे घड़े को चिढ़ाता रहता - देखो मैं तो किसान का पूरा काम करता हूँ। उसकी मेहनत का एक बूंद भी नहीं जाने देता। और एक तू है जो किसी काम के नहीं रहे। किसान को जब इसका पता चल जाएगा तो तुझे फेंक देगा और नया घड़ा ले आएगा।

ये बातें सुनकर फूटा घड़ा बहुत दुखी रहने लगा। उसे लगता बेचारा किसान इतनी मेहनत करता है, लेकिन मेरी वजह से उसका आधा पानी रास्ते में ही बरबाद हो जाता है। आखिर मैं किस काम का हूँ?

एक दिन उससे रहा नहीं गया। उसने किसान से कह ही दिया - "मालिक, आप रोज इतनी मेहनत करते हैं, पर मेरी वजह से आपका आधा पानी रास्ते में ही गिर जाता है। अब वक्त आ गया है कि आप मुझे छोड़ दीजिए और किसी नए घड़े को ले आइए। हाँ बुरा तो लगेगा, पर सच यही है कि अब मैं किसी काम का नहीं रहा।"

किसान मुस्कुराया और बोला - तुम दुखी क्यों होते हो, और मन छोटा मत करो। तुम्हें नहीं पता कि तुम बाकी घड़ों से ज्यादा काम के हो। तुम्हें पता है कि जब मैं तुम्हें रास्ते से ले जाता हूँ तो तुम्हारा पानी सड़क पर गिरता है और पौधे उगते हैं, जिस कारण उस रास्ते में हरियाली ही हरियाली है, सिर्फ तुम्हारे कारण। बताओ कि तुम अब उनसे ज्यादा काम के हो या नहीं। तुम्हें पता है वो सारे फूल तुम्हारी वजह से ही खिले थे। क्योंकि मुझे बहुत पहले से मालूम था कि तुम फूट चुके हो, इसलिए मैंने बाजार से बीज लाया, और पूरे रास्ते में जिस तरफ तुम लटकते हो उस तरफ बीज बो दिये। जब भी तुमसे पानी टपकता, वो बीज सिंच जाते और धीरे-धीरे वहाँ इतने सुंदर फूल उग आये, रास्ता सज गया। वो भी तुम्हारी वजह से। मुझे तुम्हारी कमी पता थी, लेकिन मैंने उस कमी को ताकत बना दिया।

इस दुनिया में कोई भी परफेक्ट नहीं होता। खुद को कमजोर मत समझो।

भार्गवी कौरव
कक्षा — 6वीं 'द'

हिन्दी का महत्त्व...

हिन्दी भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है। यह हमारे देश की संस्कृति, परंपरा और भावनाओं को व्यक्त करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। हिन्दी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी भारतीयता की पहचान का प्रतीक भी है। हिन्दी का उपयोग शिक्षा, साहित्य, सिनेमा और दैनिक जीवन में व्यापक रूप से किया जाता है।

हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर और हरिवंश राय बच्चन जैसे महान साहित्यकारों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिन्दी विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों के लोगों को आपस में जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमें हिन्दी का सम्मान करना चाहिए और इसके विकास तथा प्रसार में योगदान देना चाहिए।

ईशिका कौशिक
कक्षा - 10वीं 'अ'

हिन्दी दिवस....



भारत में हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। हिंदी हमारी राजभाषा है। हिंदी भारत की एकता और विविधता का प्रतीक है। यह भाषा संस्कृति, देशभक्ति और समृद्धि का प्रतीक है।

14 सितंबर 1949 को हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला। हिंदी विश्व की सबसे प्राचीन, समृद्ध और महान भाषा है। यह हमारे स्वाभिमान और गर्व की भाषा है। यह एक सरल और सुंदर भाषा है। इसे कोई भी आसानी से समझ और बोल सकता है। हिंदी ऐसी भाषा है, जिसे हम जैसा बोलते हैं, वैसा ही लिखते हैं। हिन्दी भाषा हमारे देश का गौरव है। यह भारत को एकता के सूत्र में बाँधती है। हिंदी हमारे संविधान की आधिकारिक भाषा है। महात्मा गांधी जी ने हिंदी को जनमानस की भाषा कहा था।

परी जाटव
कक्षा-9वीं 'स'

मेरा प्यारा भारत....



कुछ जीवन जीते हैं नाम कमाने को,

कुछ जीते हैं मातृभूमि पर मर मिट जाने को।

लहू की 2 बूँद इस देश के नाम कर दे जो, पुण्य आत्मा कहलाता वो,

इस देश की खातिर न जाने कितनों ने बलिदान दिया।

धरती का कण-कण कर्जदार है उनका जिन्होंने ये सम्मान दिया,

सुभाष, गांधी, नेहरू, भगत सिंह जिसके सूत्रधार हैं।

इस धरती पर जन्म लिया हम इसके कर्जदार हैं,

अगर मौका मिला कभी इसका कर्ज चुकाने को।

पहला कदम बढ़ाऊँगा मैं इस पर मर मिट जाने को,

एक सूत्र में बंधकर शत्रुओं को निपटाया है।

तभी तो ये हमारा प्यारा भारत देश बन पाया है,

भिन्न भाषा, भिन्न संस्कृति, भिन्न शिष्टाचार है।

अभिन्न भारत के यही तो श्रृंगार हैं.....

जीवन में कुछ करना है ऐसा काम,

विश्व पटल पर छा जाए भारत का नाम।

अंततः अपनी वाणी को देता हूँ मैं विराम,

सभी को मेरा नमन, भारत माँ को मेरा सलाम....

अथर्व गहोई

कक्षा 9 'स'

"मैं कर सकती हूँ" ....



जीवन के कई मोड़ पर हमें लगता है कि हमसे नहीं होगा, कुछ समझ नहीं आ रहा होता, बहुत उलझनें होती हैं। फिर चाहे वो उलझन पढ़ाई से संबंधित हो, कैरियर से संबंधित, 'जीवन में करना तो बहुत कुछ है, पर समझ कुछ नहीं आ रहा' - इससे संबंधित। कई बार हताश हो जाते हैं क्योंकि चीज़ें आपके हिसाब से नहीं होतीं, परिणाम आपकी मेहनत के अनुसार नहीं होते।

ऐसे समय में बस इतना कीजिए कि अपनी आँखें बंद करिए और कहिए - मैं कर सकती हूँ, और बस शुरू हो जाइए अपने लक्ष्य की ओर कार्य करने में। मत सोचिए आपका मित्र, पड़ोसी या कोई और आपसे कितना आगे है, बस खुद पर ध्यान दीजिए, खुद के लक्ष्य के लिए कार्य कीजिए। क्यूँ हमेशा ऐसा सोचा जाए कि मेरे में ये अच्छा नहीं, मुझे ये नहीं आता, मैं कर ही नहीं सकती।

मनोविज्ञान में इसे 'आत्म-पूर्ति भविष्यवाणी' (self-fulfilling prophecy) कहते हैं कि जैसा आप सोचते हो आपका मस्तिष्क धीरे-धीरे आपका व्यक्तित्व ही वैसा बना देता है, और आपको उसी के अनुसार परिणाम भी देखने को मिलते हैं।

इसीलिए हमेशा सकारात्मक सोचिए और हमेशा जीवन में आगे बढ़ते चलिए। उन लोगों को देखिए जो जीवन में सफल हैं, वे भी आपकी तरह ही मनुष्य हैं जिनके पास 24 घंटे ही हैं, जब वे कर सकते हैं तो आप क्यों नहीं? तो बहाना बनाने और ये सोचने कि "मुझसे नहीं होगा" ये सोचिए कि "मुझसे नहीं तो किससे होगा"।

ऐसा नहीं है कि आपके रास्ते में रुकावटें नहीं आएंगी, आप हारोगे नहीं या आप गलती नहीं करोगे - आप ये सब करोगे परंतु इन्हें अपनी ताकत बनाइए, सीखिए अपनी गलतियों से। महत्वपूर्ण ये नहीं कि आप कितनी बार गिरे, महत्वपूर्ण ये है कि गिरने के बाद आप कितनी जल्दी उठ गए और फिर उसी दृढ़ता से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कार्य करने लगे, तो अब कभी भी आपके मन में कोई खुद के प्रति संदेह हो, रास्ते कठिन लगें - बस आँखें बंद कीजिए, गहरी साँस लीजिए, मुस्कुराइए और कहिए - मैं कर सकती हूँ!...

नव्या सिंह
कक्षा- XI-ब



हिंदी भाषा की अपनी ही कहानी है.....

हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसमें "कल" का मतलब बीता हुआ कल भी हो सकता है और आने वाला कल भी! अब बेचारा सुनने वाला सोचे — भाई, आखिर कौन-सा कल? 😂

हिंदी में हम कहते हैं — "आप कहाँ जा रहे हैं?"

और सामने वाला बोले — "बस, यहीं!"

अब "यहीं" कहाँ है, यह पूछने के लिए फिर एक सवाल करना पड़ता है! 😉

हिंदी की सबसे मज़ेदार बात तो यह है कि एक ही शब्द के कई मतलब हो सकते हैं। जैसे — "हार" पहन भी सकते हैं और हार भी सकते हैं। यानी परीक्षा में हार गए तो भी "हार" और गले में डाल लिया तो भी "हार"! 😂

और हिंदी में रिश्तों के नाम तो इतने हैं कि अंग्रेज़ी वाला भी परेशान हो जाए — चाचा, ताऊ, मामा, फूफा, मौसा... अंग्रेज़ी में सबके लिए "Uncle" और हम सोचते हैं — "इनमें से सही Uncle कौन-सा है?" 😂

सच कहें तो हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं, बल्कि भावनाओं, रिश्तों और मज़ेदार शब्दों का पूरा संसार है। इसीलिए हिंदी बोलने में भी मज़ा है और हिंदी समझने में भी! ♡

कार्तिक उपाध्याय
कक्षा 10 'स'

मेहनत का फल....

"छोटा सा प्रयास, बड़ा बदलाव

एक छोटे से गाँव में मोहन नाम का एक लड़का रहता था। वह बहुत ही साधारण परिवार से था। उसके पास न तो महंगे साधन थे और न ही कोई विशेष सुविधा। लेकिन उसके मन में एक सपना था - "एक दिन मैं बड़ा होकर अच्छा अधिकारी बनूँगा और अपने माता-पिता का नाम रोशन करूँगा।"

मोहन पढ़ाई में बहुत मेहनती था। वह रोज़ सुबह जल्दी उठकर पढ़ाई करता, स्कूल जाता और शाम को भी घंटों मेहनत करता। कई बार उसके दोस्त उसका मज़ाक उड़ाते - "इतनी मेहनत करके क्या करेगा? तुम्हारे बस की बात नहीं है।" लेकिन मोहन ने कभी हार नहीं मानी। वह बस अपने लक्ष्य पर ध्यान देता रहा।

समय बीतता गया। उसने कठिन परिश्रम, धैर्य और लगन के साथ पढ़ाई जारी रखी। आखिरकार, उसकी मेहनत रंग लाई। वह परीक्षा में अच्छे अंकों से पास हुआ और आगे चलकर एक सरकारी अधिकारी बन गया! एक दिन वह अपने गाँव वापस आया। उसके माता-पिता की आँखों में खुशी के आँसू थे। मोहन ने कहा - "अगर मैं हार मान लेता, तो आज यहाँ तक नहीं पहुँच पाता। मेहनत कभी व्यर्थ नहीं जाती।"

सीख- जीवन में सफलता उन्हीं को मिलती है, जो कठिनाइयों से घबराते नहीं, बल्कि मेहनत और धैर्य के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहते हैं।

कार्तिक उपाध्याय
कक्षा - दसवीं' स '

मेरी पचमढ़ी यात्रा...

अभी तक मानना कठिन था कि धरती पर भी स्वर्ग है, पर अब नहीं। हाँ मैं पचमढ़ी की बात कर रही हूँ। जो इस गाने की पंक्ति के लिए सही है- "ये हसीन वादियाँ, ये खुला आसमां", अनुभव और सुनने में जमीन आसमान का फर्क है। पर पचमढ़ी ही क्यों? कोई और नाम क्यों नहीं। ये एक आदिवासी इलाका है। जहाँ आप लोग जम्मू कश्मीर, कुल्लू मनाली, गोवा या सिक्किम जाओगे तो वहाँ बेशक हसीन नज़ारे होंगे पर ये सबको पता है। सब इसको बढ़ाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। पर पचमढ़ी इनमें सबसे हटके है। जहाँ आदिवासी रहते हैं। बहुत कम लोग बसते हैं। उसमें भगवान की अनेक सुंदर रचनाओं में से एक पांडव गुफा के नाम पर बना है नाम पचमढ़ी। पच यानी पांच और मढ़ी यानी गुफा। सुंदरता है बहते जल समान और मढ़ी सुंदर वन समान।

जाने के लिए हमें वहाँ साहस चाहिए क्योंकि आज के युग में आप तैयार नहीं होंगे इस सुंदरता को देखने के लिए। "अप्सरा विहार" इधर तक पहुँच गए एक बार तो जाने का मन किसे होता है? मन मोहने वाला झरना, चारों दिशाओं से तितलियों से भरा वो झरना उसमें प्यारी छोटी, नटखट, चंचल, नादान काली मछलियाँ सुंदरता दुगनी करते हुए तैरती जाएँ।
नहीं, नहीं अब ये मत सोचना कि अप्सरा वहीं आती है या थी। जब हम पर अंग्रेजों का राज चल रहा था, तब जो विदेशी महिलाएँ वहाँ नहाया करती, वे आदिवासी उन्हें सुंदर व गोरी देख उन्हें अप्सरा मानने लगे। और क्योंकि वहाँ बौद्ध मठों का आना जाना लगा रहता था, इसलिए उसे विहार कहा गया। (विहार यानी बौद्ध मठों के भिक्षु निवास) अब खूबसूरती दुगनी भी है और मेहनत नहीं? अरे! अब रुकनी जहाँ आप चलना शुरू करते ही वहाँ से 3 km अंदर गहरे जंगल में शेर या जंगली जानवर का डर, गड़गड़ाते बादल का शोर या सीधे तेज़ बारिश, सनसनाती हवा और न आगे कोई न पीछे, खुद के पैरों की आवाज जब डराना शुरू करती है, तब गाइड के भरोसे बस चलते चलो। तब सुंदर नज़ारे आरंभ होंगे, प्रकृति के आनंद और ईश्वर के भरोसे चलते चलो।*

जब अत्यंत सुंदरता की बात हो और महादेव पीछे रह जाए ऐसा तो हो नहीं सकता और जहाँ पहाड़ भी हो फिर तो महादेव का होना पक्का है। अब गुप्त महादेव ही ले लो जहाँ पहाड़ पर चढ़ कर एक छोटी सी गुफा और रखवाले हैं हनुमान जी। उसमें आसानी से घुसना उनके लिए नहीं है, जो आलस्य, खाने का संतुलन नहीं रखते, उनके लिए यह नहीं बनी। यह इतनी पतली है कि इसमें घुसना सबके बस की बात नहीं।

अब बड़े महादेव वहाँ भी दर्शन प्राप्त करना बड़ा दुर्लभ है, अगर मौसम आपका साथ न दे तो, पर कृपा हो तो साक्षात दर्शन मिलते हैं। नहीं समझ पड़ा? अब यह आप पर निर्भर है कि आपकी इस पर क्या मत है। अब जटाशंकर का, क्या, क्यों, कहाँ, कब इन में से कुछ नहीं बताऊंगी, अब सीधे मेरी और मेरे परिवार (माता व पिता) की यात्रा बताना पसंद करूँगी।

तो यात्रा की शुरुआत तब से है जब अंत था यानी उस दिन हमारी यात्रा का अंतिम दिन था। जब एक तरफ घूमना दूसरी तरफ सुंदर चढ़ाने हो तो नीचे आँखें कहाँ जाती हैं, पर नीचे नंगे पैर रहना जरूरी हो रहा था,क्योंकि हमें अपने पैरों को कंकड़ों से नहीं कटवाना था। जब 1 km दूर नीचे चल कर पैर थक चुके थे, तब मंदिर दिखा और राम जी, शंकर जी तो, मथुरा के दुलारे लड्डू गोपाल न दिखे ये तो असम्भव था। हाँ वो दिखे पर अपनी एक नई शरारती मुस्कान के साथ, नटखट चेहरे से

मुझे आकर्षित करते हुए दिखे। मैंने भी उन्हें बोल दिया - 'चलो हमारे साथ'। ये बोलकर छोटे मंदिर से निकले ही, कि बहुत सारे गाइड आ गए। हमने उन्हें मना कर दिया। वहीं दो कुत्ते एक चट्टान में खड़े थे, वो मुझे देखते ही मेरी ओर बढ़े। हमने चूंकि ये देखा नहीं पर सुना था कि वो हमें आखिरी तक साथ राह दिखाते हैं, तो वहीं समझ कर कह दिया उन्हें 'चलो'! हमारी गाइडिंग करो।
आप मान नहीं पाओगे कि उन्होंने हमें इतने अच्छे से बताया।

बिना बोले बहुत कुछ समझाया, एक बार दो रास्ते दिखे, एक तरफ लोग जा रहे थे, पर हमें वो दूसरे रास्ते से ले गए, उन पर भरोसा कर जब देखा तो एक सुंदर मंदिर (गुप्त) था जो कुछ को ही पता था। जब आगे बढ़े तो बड़े मंदिर पहुँचे, वो हमारे लिए रुके, और वापस भी लाए वहीं तक जहाँ से वे मिले थे, फिर उससे आगे एक कदम ही नहीं। यात्रा तो और लम्बी थी, और सुन्दरता और दुगनी पर सब बताना संभव नहीं। एक शब्द में कहूँ तो पचमढ़ी वही 'सुकून' है जो हर व्यक्ति ढूंढता है। वहाँ प्रकृति के सुकून के साथ ही एक भीतर का सुकून मिलता है।

प्रशस्ति रायकवार
कक्षा- 10 'स'



प्रकृति मुस्कुराए...

सुबह की पहली किरण जब आए ,
फूलों पर मुस्कान सजाए।
पत्तों से जब हवा गुज़रती,
धीरे-धीरे गीत सुनाए।

नीला आकाश, हरी सी धरती,
नदियाँ बहती जाएँ।
पक्षी अपने पंख फैलाकर,
खुशियों के गीत सुनाएँ।
हम भी इसका मान बढ़ाएँ,
पेड़ लगाएँ, पानी बचाएँ।
प्रकृति अगर यूँ ही मुस्कुराए,
हम भी हर दिन खुशियाँ पाएँ .....

खुशी कुमारी
कक्षा 12 द

मैं क्या चाहती हूँ.....



मैं उड़ना चाहती हूँ , मैं बढ़ना चाहती हूँ ,
इन परों को मैं अब खोलना चाहती हूँ।
जमाने की जंजीरों से आज़ाद होना चाहती हूँ,
लोगों की सोच से परे हो जाना चाहती हूँ।
कुछ सपने हैं , जिन्हें मैं सजाना चाहती हूँ ,
लोगों के हाथों से वह डोर छुड़ाना चाहती हूँ।
पकड़कर जिसे मंजिल तक जाना चाहती हूँ ,
लोगों की सोच से परे हो जाना चाहती हूँ।
मैं गीत गाना चाहती हूँ, संगीत सीखना चाहती हूँ,
मैं भाव छुपाना चाहती हूँ, थोड़ा सा रोना चाहती हूँ।
इतना शांत हो जाना चाहती हूँ कि.....
लोगों की सोच से परे हो जाना चाहती हूँ .....

खुशी
कक्षा-12 द



माँ .....

माँ वह है जो बिना कुछ कहे,
मेरे मन की बात समझ जाती है।
जब मैं थककर घर आती हूँ,
माँ प्यार से पास बुलाती है।
मेरी सारी परेशानियों को,
अपनी बातों से दूर भगाती है।
कभी डाँटती है, कभी समझाती है,
इस तरह अपना प्यार जताती है।
मेरी हर छोटी-बड़ी खुशी में,
माँ का सबसे बड़ा हाथ होता है।
मैं चाहे कितनी भी बड़ी हो जाऊँ,
माँ के लिए बच्ची ही रहूँगी।
उसके दिए प्यार और संस्कारों को,
हमेशा अपने साथ लेकर चलूँगी।
मेरी दुनिया की सबसे प्यारी चीज़,
माँ का प्यार और साथ है।
मेरी हर खुसी में माँ शामिल है,
क्योंकि माँ ही मेरी सबसे बड़ी ताकत है...

कृष्णा उपमन्यु
कक्षा-12 द

मेरी केदार यात्रा...



जबलपुर का मैं अभिलाष चक्रवर्ती,
संग परिवार का प्यार।
उड़ीसा से देवभूमि का यात्रा,
केदारनाथ का द्वार।
पापा का हाथ थामे चले,
सबका साथ निभाना।
नानी, नाना, दादी और भाई ,
मम्मी संग खुशियाँ मनाना।
चढ़ाई में जोश था पूरा,
नज़ारे प्यारे प्यारे .....
फोन की बैंटरी खाली हुई,
बाकी रह गई कुछ तस्वीरें।
उतरते वक्त जो दर्द हुआ,
पैरों में था तनाव।
कदम मम्मी के हिम्मत हारे,
पर पूरा हुआ पड़ाव।
घर पहुँचकर चैन मिला,
यादें बसी हैं मन में।
बाबा केदार के दर्शन हुए,
सबसे पावन क्षण में ...

अभिलाष चक्रवर्ती
कक्षा-11वीं 'ई'

समय का सदुपयोग....



कालि करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलय होइगी, बहुरि करेगा कब॥

- कबीरदास

समय ही मनुष्य को कमजोर या बलवान बनाता है। जो व्यक्ति अपना कार्य समय पर करते हैं, वे जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। समाज में उनको सम्मान मिलता है। जिन लोगों ने समय का सही इस्तेमाल किया, वह आज सुखी और सफल हैं। समय का सही उपयोग न करने वाले लोग दुखी रहते हैं। हर कार्य में उनको असफलता ही हाथ लगती है और फिर पश्चाताप करते हैं। अवसर के हाथ से निकल जाने के बाद पश्चाताप करने से कोई लाभ नहीं।

किसी ने कहा भी है कि-

"का वर्षा जब कृषि सुखाने, समय चूकि पुनि का पछिताने।"

पश्चाताप से बचने के लिए समय का सही इस्तेमाल और उचित परिश्रम करना चाहिए। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता है, हमें ही समय के साथ चलना होगा।

किसी ने कहा भी है कि –

समय न ठहरा है कभी, कभी न बदली चाल।
जैसा जिसका कर्म है, वैसा उसका हाल॥

अनुराग गोस्वामी
कक्षा- 8वीं 'अ'

बड़ी बेटियाँ...

लोग अक्सर कहते हैं कि,
बेटों जैसी होती है घर की बड़ी बेटियाँ,
पर सच बताँऊ, हमें बेटी नहीं बनना,
अपने पापा की ताकत बनना है।
जो उनके झुकते कंधो को थाम सके.....
माँ की वो परछाई बनना है,
जो उनकी अन-कही तकलीफें पढ़ सके।
फर्क बस इतना रहा कि,
कभी अपनी थकावट का शोर नहीं किया।
कोई शिकायत नहीं की ,
बस मुस्कुराकर हर फर्ज को गले लगाया।
कुछ जिम्मेदारियाँ बिना कुछ कहे,
निभाने में ही मुकम्मल होती है।।

कामना

कक्षा- 10वीं 'ई'

मेरी सफलता...



सफलता से थोड़ी दूरी है,
क्योंकि तैयारी अभी अधूरी है।
वक्त लगेगा और मुझे,
पर नजर लक्ष्य पर पूरी है॥
सपने देखे जो बहुत बड़े,
उनकी जिम्मेदारी मेरी है।
है आँखों में अब नींद कहाँ ?
कहाँ हिम्मत मैंने हारी है ?
बढ़ूंगी और हासिल करूँगी,
कोशिश पूरी जारी है।
होगा एक दिन ऐसा भी,
जब कहूंगी-
हाँ ! आज मेरी बारी है...

गार्गी यादव
कक्षा-6 वीं 'ई'

आदर्श विद्यार्थी...



"काक चेष्टा, बको ध्यानं, श्वान निद्रा तथैव च।
अल्पहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणम् ॥"

विद्यार्थी जीवन मानव जीवन का स्वर्णिम काल होता है। यह वह समय है जब एक व्यक्ति के, चरित्र विचारों और भविष्य की नींव रखी जाती है। एक आदर्श विद्यार्थी वह है जो केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रहकर अनुशासन नम्रता, और उच्च नैतिक मूल्यों का पालन करता है।

आदर्श विद्यार्थी के मुख्य गुण-

- अनुशासन और समय का पालन
- जिज्ञासा और सीखने की ललक
- आदर और विनम्रता
- कठिन परिश्रम
- उत्तम स्वास्थ्य
- राष्ट्र निर्माण में भूमिका

आज का विद्यार्थी ही कल का एक जिम्मेदार नागरिक बनता है। एक आदर्श विद्यार्थी देश प्रेम की भावना से ओत प्रोत होता है। वह अपने आचरण से न केवल अपने परिवार और विद्यालय का नाम रोशन करता है, बल्कि पूरे समाज के लिए प्रेरणा बनता है।

फाल्गुनी शर्मा
कक्षा-6वीं 'ई'

हिन्दी पहेलियाँ...

1. ऐसी कौन सी चीज है ,जो गर्म होने पर जम जाती है ?
2. फूल भी हूँ, फल भी हूँ, मिठाई भी हूँ, बताओ में कौन ?
3. ऐसी कौन सी चीज है जिसे तोडने पर आवाज नही आती ?
4. कौआ आसमान में उडता है, मगर रहता कहाँ है।
5. ऐसी कौन-सी ड्रेस है ,जिसे हम पहन नही सकते ?
6. ऐसी कौन सी चीज है, जिसे काटने के बाद आप गाना गाने लगते है ?
7. ऐसा कौन सा शहर है, जिसे हम खा सकते हैं?
8. गाय दूध देती है, मुर्गी अण्डे देती है, ऐसा कौन है जो दोनों देता है ?
9. ऐसा कौन सा पति है, जो जंगल मे भी रहता है और शहर मे भी ?
10. ऐसी कौन सी चीज है, जिसे खाने के बाद भी भूख लगती है?

1.अंडा 2.अखबार 3.कसम 4. पानी में 5. पेड़ 6.केक 7.शिमला (मिर्च) 8.दुकानदार 9.वास्तविक 10. आह

संकलन – खुशी गुर्जर
कक्षा-6वीं 'ई'

अभी राह बाकी है....

थक कर बैठ गया हूँ मैं, पर चलना अभी बाकी है।

आंखों में जो स्वप्न सजे है, पलना अभी बाकी है।

कुछ ठोकर ने मुझे सिखाया, कुछ समय ने मुझे संवारा।

गिरकर मैंने यही जाना, हार नहीं जीवन का सहारा।

संघर्ष हो जीवन का सहारा .....

चारों ओर जब हो अंधियारा, दीप तब स्वयं बनना होगा।

जिस राह कोई साथ न हो, उस राह अकेले चलना होगा।

कल जब पीछे मुड़कर देखूं, मन में कभी मलाल न हो।

इतना गर्व रहे खुद पर, गिरा बहुत पर हारा न हो।

मंजिल चाहे दूर 'खडी हो, हर पग आगे बढ़ना होगा|

जीवन ने जो स्वप्न दिए हैं,

उनको सच करके दिखाना होगा.....

रितिका

कक्षा- 9वीं 'अ'

कब से तन्हा हूँ.....



जब से शहरी करण क्या हुआ है?
जमाना मंहगा हुआ है।
सभी धीरे- धीरे मुझे अकेला छोड़कर जाने लगे हैं।
कभी में रोशनी से दमकता था,
क्योंकि शाम को घर में संध्या वंदन होता था।
बाबा काम से घर लौटते ,अम्मा चूल्हे पर रात्रि भोज बनाती,
गाय भी बाहर से भीतर बांधी जाती।
बच्चों को हेला दिया जाता....
चलो!..अब मत खेलो!...
दोनों वक्त मिल रहे हैं...
बाबा बुला रहे हैं...

मैं चुपचाप सब देख रहा होता...
मुस्कुरा जाता....
मुझे सब याद है लेकिन बच्चे बड़े हो गए हैं।...
बाबा-अम्मा बूढ़े हो गये हैं...

खर्चे भी तो बढ़ गये... गुजारा कैसे होता?
बाबा अब थक गये, नहीं तो कोई और काम भी करते।

कुछ उपाय न था, सो मुझे छोड़कर चले गए।
काकी को बोला मेरा ध्यान रखने को....
आऐंगे हम कभी- कभी(प्रवासी बच्चे)...! सो मैं भी इंतज़ार कर रहा हूँ..
उनके आने का!!!
कुर्सी भी राह देख रही है...
जब से बाबा अम्मा गुज़र गये, तब से !!
तब से बच्चों की वापसी का इंतज़ार है मुझे !...
मैं! बाबा-अम्मा के घर का दरवाज़ा हूँ!!
मैं कब से तन्हा हूँ!!!!!
हेला:- पुकारना या आवाज लगाना

विजयता जादौन
टीजीटी हिंदी

स्वच्छता की शुरुआत...



साफ़ – सुथरी चीज़े किसको अच्छी नहीं लगती ? चाहे वह हमारा गाँव ,गली या मौहल्ला हो या फिर हमारा घर या हम खुद ही क्यों न हो। स्वस्थ-जीवन का सीधा – सादा सबंध स्वच्छता से ही है।

आजकल पूरे भारतवर्ष में स्वच्छता कार्यकर्मों और संदेशों की बाढ़ सी आ गई है, लेकिन मेरा मानना यह है कि स्वच्छ रहना और रखना तो हमारी दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा होने के साथ – साथ मनुष्य होने की निशानी भी है, क्योंकि जानवरों से ऐसी आशा नहीं की जाती।

प्रश्न यह है कि स्वच्छता की शुरुआत कहाँ से हो ? घर से या परिवार से ? या फिर स्वयं के शरीर से ? इस पर मेरा विचार यह है कि यह शुरुआत शरीर से भी आगे बढ़कर स्वयं के विचारों की शुद्धता एवं स्वच्छता से होनी चाहिए। क्योंकि भीतर की स्वच्छ - दृष्टि ही बाहर की स्वच्छ – सृष्टि का निर्माण कर सकती है।जब तक आपके विचार साफ़ – सुथरे नहीं होंगे, तब तक आप सामाजिक स्तर पर स्वच्छ होने का दावा नहीं कर सकते।

विचारों को शुद्ध कैसे करे ? यह प्रश्न जितना जटिल है, इसका उत्तर उतना ही सरल और सीधा है। सबसे पहले आप सही और गलत विचारों को पहचानें, क्योंकि गलत विचार ही हमारे दिमाग को प्रदूषित करते हैं। इनको पहचानने के लिय कुछ नहीं करना। आपको बस यह देखना है कि जो विचार आपको अन्दर से कमज़ोर बनाये, वह गलत विचार है और जो विचार आपको अन्दर से सशक्त करे, वह सही विचार है। अब आप आराम से गलत विचारों की पहचान कर, उन्हें अपने दिमाग से बाहर निकालें। उन्हें अपने दिमाग में पड़े न रहने दे, क्योंकि ख़राब चीजें ज्यादा दिन तक पड़े रहने पर सड़ जाती है। अब चाहे वह दिमाग हो या आपका घर(देश) उसको कूड़ादान न बनने दें।

दूसरों को माफ़ करने की आदत डालिए ,मन से गलत विचारों के बोझ को हल्का कीजिए, ईर्ष्या, भेदभाव,घमंड,गुस्सा, झूठ आदि विचारों को अपने ऊपर हावी न होने दे। सच्चाई, ईमानदारी, हिम्मत, सदभाव, शांति, प्रेम और सबको साथ लेकर चलने का विचार जैसे निर्मल भावों से अपने दिमाग को सजाये एवं सँवारें और फिर अपने भीतर मुस्कराहट की अगरबत्ती जलाएं जो आपके चेहरे के साथ – साथ दूसरों को भी महकाएगी। स्वच्छ और स्वस्थ रहने की जिद पालिये। इसके बाद बिना कुछ सोचे समझे जुट जाइये देश के अब तक के सबसे बड़े स्वच्छता अभियान में, क्योंकि अब आप सही मायने में इस ऐतिहासिक अभियान का नेतृत्व कर सकते है।अभी हाल ही में सुरेंद्र सिंह चौधरी (बिट्टू तबाही) जो मध्य प्रदेश के रहने वाले हैं, व्यक्तिगत प्रयास से अजनार नदी का कायाकल्प कर यह सिद्ध कर दिया है कि, अगर देश का युवा ठान ले तो पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक(EPI) द्वारा जारी भारत की 177 देशों में 176 रैंक को सम्मानजनक स्तिथि तक पहुंचाया जा सकता है। प्रयास छोटे स्तर पर किए जाने की आवश्यकता है। अब स्वयं निर्णय लें, स्वच्छता पर यह शुरुआत सही है या गलत? अगर सही लगे तो- उठो, करो आप अपनी शुरुआत,ग़लत लगे तो अपने देश में कूड़ादानों की कमी नहीं।

राकेश कुमार

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक

अंग्रेजी की शिक्षिका...



मैं अंग्रेजी की शिक्षिका...
जब कक्षा में बैठे छात्रों को देखती हूँ,
पढ़ते मासूम चेहरों में, रोज़ एक नया सवेरा पाती हूँ।
हर बच्चे की आँखों में, एक नया कल उभरते देखती हूँ,
उनकी नन्ही सी कोशिशों में,
मैं अपनी कामयाबी परखती हूँ।
इन बच्चों की महक से ही, मेरा जीवन महक उठता है,
इनकी निश्छल मुस्कानों में,
मेरा बचपन मुस्कुराता है।
इनकी लगन और चंचलता, मुझे मेरे बीते कल में ले जाती है,
खोयी हुई उस मासूमियत को मेरे जीवन में वापस लाती है।
मैं अंग्रेजी की शिक्षिका....
जब कक्षा में खो जाती हूँ,
हर दिन, हर पल, हर चेहरे में ,
एक नयी कहानी पाती हूँ।
कैसे ये नन्हें हाथ, हर रोज़ एक नया ख़्वाब सजाते हैं,
कुछ पाने की ज़िद में, एक नई उड़ान भर जाते हैं।
हर ख़्वाब को पूरा करने का हौसला,
ये अपने साथ लाते हैं,
बंद आँखो में भी ये बच्चे नई दुनिया बना जाते हैं।
इनसे ही तो मेरे हर ख़्वाब में रंगत आती है,
इनकी हँसी मुझे हर पल मेरा बचपन याद दिलाती है,
हाँ, मैं अंग्रेजी की शिक्षिका शब्द सिखा कर,
इन्हें ज़िंदगी जीना सिखाती हूँ।
मैं अंग्रेजी की शिक्षिका,
जब कक्षा में बैठे छात्रों को देखती हूँ....

अंजली सिकरवार
स्नातकोत्तर शिक्षिका
(अंग्रेजी)

मैं हारा नहीं था, बस मुझे रास्ता चाहिए था....



1. पहली तिमाही – निराशा का समय

कक्षा 9 की पहली तिमाही परीक्षा का परिणाम मेरे हाथ में था। गणित में 33% से भी कम अंक देखकर मेरा मन उदास हो गया। मुझे लगा—"क्या गणित सचमुच मेरे बस की बात नहीं?" कक्षा 8 तक सब कुछ आसान लगता था, लेकिन कक्षा 9 में सिलेबस अचानक बहुत बदल गया था। जो अध्याय पहले हल्के-फुल्के लगते थे, अब गहराई से समझने पड़ रहे थे। सिर्फ विषय ही नहीं, जीवन भी बदल गया था—अब ज्यादा जिम्मेदारी, ज्यादा ट्यूशन, कम खेल-कूद और अधिक पढ़ाई का समय।

2. आत्मसंवाद – हार नहीं, कोशिश

उसी रात मैंने खुद से बात की—"नहीं! ये अंत नहीं है। मुझे बस और मेहनत की जरूरत है।" अगले दिन मैं अपनी कॉपी लेकर अपने गणित के शिक्षक के पास पहुँचा। उन्होंने मेरी गलतियाँ एक-एक करके समझाई। उन्होंने कहा—"जरूरी नहीं कि तुम्हें कठिनाई समझने की कमी हो, समझने की जरूरत है। पहले बेसिक्स मजबूत करो, फिर धीरे-धीरे कठिन सवालों पर काम करो।" उनकी यह बात मेरे लिए हौसला थी।

3. मेहनत का सफर – छोटे कदम, बड़े बदलाव

मैंने अपनी दिनचर्या बदली। रोज़ का टाइम टेबल बनाया। हर दिन कम से कम 2–3 घंटे गणित के अभ्यास के लिए रखे। शुरुआत में सवाल समझने में ही दिमाग घूम जाता था, पर मैंने हार नहीं मानी। बेसिक कॉन्सेप्ट्स—जैसे भिन्न, समीकरण, ज्यामिति—को फिर से दोहराया। ज्यादा प्रैक्टिस की, पुराने सवालों को हल किया और जहाँ अटकता था, वहाँ शिक्षक से पूछा। कभी-कभी थकान होती थी, मन करता था छोड़ दूँ, लेकिन फिर खुद से कहता—"थोड़ा और... बस थोड़ा और..."

4. परिणाम – मेहनत रंग लाई

फिर आया अर्द्धवार्षिक परीक्षा का परिणाम। मैं घबराया हुआ था, लेकिन जब मेरे अंक देखे—गणित में 60 से अधिक ! मेरी आँखों में खुशी के आँसू थे। मुझे लगा जैसे मैं एक नई दुनिया में आ गया हूँ। यह सिर्फ अंकों की जीत नहीं थी, बल्कि मेरे आत्मविश्वास, मेहनत और सही मार्गदर्शन की जीत थी।

5. जो सीखा-

अब मैं जान चुका हूँ कि—

- सिलेबस बदलता है, जीवन भी बदलता है, पर मेहनत कभी पुरानी नहीं होती।
- बेसिक्स मजबूत हों, तो कठिन से कठिन विषय भी आसान लगने लगता है।
- मुश्किल समय स्थायी नहीं होता, वे आते हैं और चले भी जाते हैं।
- शिक्षक का मार्गदर्शन, स्वयं पर विश्वास और नियमित अभ्यास—यही सफलता की कुंजी है।

"हर असफलता एक नई सीख है,
और हर कठिनाई एक नई ताकत!"

हेमेन्द्र सिंह यादव
टी.जी.टी. विज्ञान

हिंदी...



जन-जन की भाषा है **हिंदी ,**

भारत की अभिलाषा है **हिंदी ।**

माता की ममता है **हिंदी,**

पिता का सम्मान है **हिंदी ।**

भाई-बहन का स्नेह है **हिंदी**,

दादी- बाबा का प्रेम है **हिंदी ।**

सुहागिनों का सिंदूर है **हिंदी**,

सैनिक की बंदूक है **हिंदी ।**

हर देशभक्त की आवाज है **हिंदी**,

किसानों का लहराता खेत है **हिंदी ।**

बच्चे का तुतलाता शब्द है **हिंदी** ,

मैया की प्यारी लोरी है **हिंदी ।**

भारत देश की शान है **हिंदी,**

हम सब का अभिमान है **हिंदी ।**

जन-जन की भाषा है **हिंदी**,

भारत की अभिलाषा है **हिंदी ।**

कहे-अनकहे, सब कड़वे-मीठे शब्द है **हिंदी** ,

भारत की आशा है **हिंदी,** भारत की भाषा है **हिंदी ।**

सीता सिंह चौहान

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक

(हिंदी)

सपने.....



रात को मैंने देखा सपना,

सुन्दर सा एक घर है अपना।

इम्पाला और फिएट कारें,

खड़ी हुई हैं अपने द्वारे।

नौकर चाकर घूम रहे हैं,

हम मस्ती में झूम रहे हैं।

खाने को लड्डू और बरफी,

आइसक्रीम और रसमलाई।

तभी मम्मी ने मुझे जगाया,

प्यार से चूमा और सहलाया।

उठो लाल छोड़ो भी सपने,

सपने कब होते हैं अपने....

संतोष मिश्रा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
(सामाजिक विज्ञान)

कर्म-फल...



"कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस करहिं सो तस फल चाखा।"

- गोस्वामी तुलसीदास

श्री रामचरित मानस की उक्त चौपाई का आशय यह है कि- यह संसार कर्म की प्रधानता वाला है। जो व्यक्ति जैसा कर्म करता है, वह वैसे ही फल का भोक्ता बनता है। यह भी सत्य है कि अच्छे कर्म का सुफल और बुरे कर्म या अकर्मण्यता का कुफल मिलना निश्चित है। मनुष्य अपने कर्म फल से बच नहीं सकता है।

जिस प्रकार गाय का बछड़ा असंख्य गायों के बीच में से भी अपनी माँ को खोज लेता है, ठीक उसी प्रकार हमारे कृत कर्म का फल भी हमें ढूँढ़ ही लेता है। "बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से होइ"- अर्थात् बबूल का पेड़ लगाकर, उससे आम के फल की अपेक्षा करना सरासर अनुचित है। इसलिए हमें कभी भी किसी का मन, वचन एवं कर्म से बुरा नहीं सोचना चाहिए। यही उचित एवं मानवता के अनुकूल है। जब कर्म का फल निश्चित है, तब फल की चिंता करना व्यर्थ है। इसलिए हमें निष्काम भाव से सदैव सत्कर्म करते रहना चाहिए। यही सर्वोत्तम एवं श्रेयष्कर होगा।

श्रीमद् भगवद् गीता में भगवान श्री कृष्ण ने निष्काम कर्म (फल की इच्छा रहित कर्म) का संदेश दिया है। फल की इच्छा से किया गया कर्म चिंता, तनाव एवं शंका से युक्त होता है, जबकि निष्काम कर्म आनंद भाव से समन्वित होता है।

फलेच्छा भाव से किया गया कर्म मात्रात्मक एवं गुणात्मक रूप से उत्तम कोटि का नहीं होता है, जबकि निष्काम भाव से किए गए कर्म की मात्रा एवं गुणवत्ता दोनों ही सर्वोत्तम होती हैं। जो विद्यार्थी फलेच्छा यानी परीक्षा परिणाम को ध्यान में रखकर अध्ययन करते हैं,उनका मन पढ़ाई में नहीं लगता है,बार-बार परिणाम की चिंता होने लगती है।जब कर्म-फल निश्चित है,तो फिर व्यर्थ की चिंता क्यों ? विद्यार्थी को परीक्षा परिणाम की चिंता छोड़कर पूरी ऊर्जा के साथ मन लगाकर नवीन ज्ञान प्राप्त करने तथा नया सबक सीखने में आनंद का अनुभव करना चाहिए।

यथा कर्मम् तथा फलम् सदैव स्मरणीयम् .....

ओम प्रकाश गिरी गोस्वामी
परास्नातक शिक्षक
(हिन्दी)

गढ़ते नागरिक



बच्चों के बदलते व्यवहार को दिशा देने में शिक्षक और अभिभावकों का साझा दायित्व

जब हम आज की कक्षा में कदम रखते हैं, तो बच्चों की ऊर्जा और उत्सुकता देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। आज की पीढ़ी असाधारण रूप से तीक्ष्ण बुद्धि, तकनीक-कुशल और स्पष्टवादी है। किंतु, इस चमक-दमक के पीछे एक ऐसा संवेदनशील पहलू भी उभर रहा है जिसे अनदेखा करना कठिन है—आपसी शिष्टाचार में आ रही गिरावट, सहनशीलता की कमी और पल-भर में आपा खोने की प्रवृत्ति।

एक शिक्षक होने के नाते हमारी जिम्मेदारी केवल किताबी ज्ञान देने तक सीमित नहीं है। हम सिर्फ परीक्षा के लिए अंक तैयार नहीं कर रहे, बल्कि आने वाले कल के समाज की नींव रख रहे हैं। किंतु, किसी भी बालक का चरित्र केवल स्कूल की चारदीवारी में नहीं गढ़ा जाता; उसका मूल ढांचा उसके घर और पारिवारिक परिवेश में तैयार होता है। जब तक स्कूल और घर एक ही दिशा में प्रयास नहीं करेंगे, तब तक यह बदलाव अधूरा रहेगा।

व्यवहार में आते प्रमुख बदलाव: स्कूल और घर का यथार्थ

1. **आदर और मर्यादा का घटता स्तर**
    - **कक्षा का अनुभव:** दूसरों की बात को ध्यान से सुनना, अपनी बारी की प्रतीक्षा करना और गुरुजनों या सहपाठियों के प्रति विनम्रता दर्शाना—ये मूल्य अब अनौपचारिक या उपेक्षापूर्ण व्यवहार के पीछे छिपते जा रहे हैं।
    - **पारिवारिक कारण:** कई बार घरों में स्पष्ट सीमाओं और अनुशासन की कमी इसका कारण बनती है। जब माता-पिता केवल एक "मित्र" की भूमिका अपना लेते हैं, तो बच्चे समाज और विद्यालय में अधिकार या पद की गरिमा को समझना भूल जाते हैं।
2. **नागरिक बोध (Civic Sense) और सामाजिक बोध का अभाव**
    - **कक्षा का अनुभव:** सार्वजनिक या साझा संपत्ति की देखभाल करना, कक्षा को स्वच्छ रखना और कतार में अपनी बारी का इंतजार करना जैसी प्राथमिक आदतें अब दुर्लभ होती जा रही हैं।
    - **पारिवारिक कारण:** जब बच्चे अपने घर में हर काम के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं या सार्वजनिक स्थानों पर नियमों के उल्लंघन को सहजता से लेते देखते हैं, तो उनके भीतर यह भाव घर कर जाता है कि उनकी व्यक्तिगत सुविधा समाज की भलाई से बड़ी है।

3. **धैर्य की कमी और तुरंत परिणाम पाने की व्याकुलता**
    - **कक्षा का अनुभव:** किसी जटिल प्रश्न पर देर तक सोचना, शांति से बैठना या अपने से भिन्न विचारों को सहना बच्चों के लिए अत्यंत कठिन होता जा रहा है।
    - **पारिवारिक कारण:** "इंसटेंट" तकनीक के इस दौर में—जहाँ एक क्लिक पर मनोरंजन और सूचना उपलब्ध है—बच्चों के सब्र का बांध बहुत कच्चा हो गया है। जब हर जिद को तुरंत पूरा किया जाता है, तो उनमें धैर्य विकसित करने की क्षमता समाप्त हो जाती है।
4. **अत्यधिक उत्तेजना और क्षणिक गुस्सा**
    - **कक्षा का अनुभव:** छोटी सी असफलता या प्रतिक्रिया पर बच्चे का उग्र हो जाना केवल उस एक पल का गुस्सा नहीं होता; यह उनके भीतर जमा मानसिक तनाव का विस्फोट होता है।
    - **पारिवारिक कारण:** देर रात तक स्क्रीन देखना, शारीरिक गतिविधियों की कमी और निरंतर डिजिटल उत्तेजना बच्चों के तंत्रिका तंत्र (Nervous System) को थका देती है। घर पर शांत और तनावमुक्त माहौल न मिलने का नतीजा स्कूल में गुस्से के रूप में बाहर आता है।

माता-पिता और परवरिश की भूमिका: गहराई से समझें

- **डिजिटल सहारा:** बच्चों को व्यस्त रखने के लिए स्मार्टफोन या टीवी देना उनके मानसिक विकास के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। इससे वे वास्तविक जीवन की बातचीत और संवेदनाओं से दूर हो रहे हैं।
- **अति-सुरक्षात्मक रवैया (Over-protective Parenting):** बच्चों को हर छोटी-मोटी कठिनाई या असफलता से बचाना उन्हें जीवन के संघर्षों का सामना करने से रोक देता है। बच्चे यह नहीं सीख पाते कि अपनी गलतियों की जिम्मेदारी कैसे ली जाए।
- **पारिवारिक संवाद का अभाव:** दिनभर की व्यस्तता के कारण घर में साथ बैठकर बातें करने, कहानियां सुनाने या नैतिक मूल्यों पर चर्चा करने का समय लगातार कम होता जा रहा है।

एक सशक्त कार्ययोजना: शिक्षक और अभिभावक का सहयोग

प्राथमिकता	विद्यालय की भूमिका (शिक्षक)	गृह परिवेश की भूमिका (अभिभावक)
मर्यादा एवं शिष्टाचार	कक्षा में स्पष्ट नियम लागू करें। विनम्र व्यवहार करने वाले छात्रों की खुले दिल से प्रशंसा करें।	घर में बड़ों और सहायकों के प्रति आदर का माहौल बनाएं। बच्चों को अपनी बात मर्यादा में रहकर कहना सिखाएं।
नागरिक बोध	कक्षा की व्यवस्था और स्वच्छता की जिम्मेदारी छात्रों के समूहों में बांटें।	बच्चों को घर के दैनिक कार्यों में शामिल करें तथा सार्वजनिक स्थलों पर नागरिक नियमों का पालन कराएं।
धैर्य और सहनशीलता	सामूहिक प्रोजेक्ट्स दें जहाँ सहमति बनाना आवश्यक हो; बिना तकनीक के विचार-विमर्श को बढ़ावा दें।	हर मांग को तुरंत पूरा न करें। बच्चों को अपनी बारी का इंतजार करना और बोरियत को झेलना सीखने दें।
आवेग नियंत्रण	गुस्से या तनाव के समय छात्र को शांत होने के लिए "रीसेट टाइम" दें, फिर संवाद करें।	प्रतिक्रिया देने से पहले बच्चे की भावना को स्वीकारें ("मैं समझ सकता/सकती हूँ कि आप परेशान हैं"), फिर समाधान ढूंढें।
मानसिक एकाग्रता	पढ़ाई के छोटे चरण (Sprints) तय करें और बीच-बीच में थोड़े विश्राम का अवसर दें।	भोजन के समय और सोने से एक घंटे पूर्व स्क्रीन का उपयोग पूर्णतः बंद करें।

किसी भी बच्चे के व्यक्तित्व को रातों-रात नहीं बदला जा सकता। इसके लिए निरंतरता, अपार धैर्य और प्रेमपूर्ण अनुशासन की आवश्यकता होती है। जब शिक्षक और अभिभावक एक-दूसरे के पूरक बनकर खड़े होंगे, तभी हम अपनी भावी पीढ़ी को न केवल योग्य, बल्कि एक संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बना पाएंगे।

डॉ. भारती यादव,

प्रधानाध्यापिका

शिक्षा का पावन वटवृक्ष: संघर्ष, संकल्प और सर्वांगीण उत्थान



केंद्रीय विद्यालय संगठन (केवीएस) केवल एक शैक्षणिक संस्थान नहीं, अपितु भारतीय शिक्षा-जगत का एक दैदीप्यमान महा वटवृक्ष है। १५ दिसंबर १९६३ को अपनी स्थापना के बाद से, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के सिद्धांतों पर चलते हुए, इसकी 25 संभागों और १२५० से अधिक विद्यालयों रूपी शाखाएँ संपूर्ण भारत और विदेशों (काठमांडू, मास्को, तेहरान) में उत्कृष्ट, संस्कारयुक्त एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की अविरल धारा प्रवाहित कर रही हैं। यह संगठन विद्यार्थियों के केवल बौद्धिक उत्थान का साधन नहीं, बल्कि एक ऐसा समग्र मंच है, जहाँ उनका शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक परिष्कार होता है। यहाँ ढला हुआ विद्यार्थी अपने सर्वांगीण विकास के बल पर परिवार, समाज और राष्ट्र के नवनिर्माण में अपना अतुलनीय योगदान देता है।

1. असफलता और विषमताएँ: सफलता की कसौटी

विद्यार्थी जीवन पथ पर यदि कभी असफलता, निराशा या परिस्थितिजन्य बाधाएँ आएँ, तो हताश होकर रुक जाना सर्वथा अनुचित है। असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयास पूर्ण मनोयोग से नहीं हुआ। आवश्यकता इस बात की है कि हम आत्म-विश्लेषण करें, अपनी कमियों को समझें और दोगुने आत्मबल के साथ पुनः प्रयास करें। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने 'रश्मिरथी' में विपरीत परिस्थितियों से तपकर निकलने वाले व्यक्तित्व का महिमामंडन करते हुए लिखा है:

"वर्षों तक वन में घूम-घूम, बाधा-विघ्नों को चूम-चूम,
सह धूप-घाम, पानी-पत्थर, पांडव आये कुछ और निखर।
सौभाग्य न सब दिन सोता है, देखें, आगे क्या होता है।"

दिनकर जी का यह स्पष्ट संदेश है कि कठिनाइयाँ और विपदाएँ मनुष्य को नष्ट करने नहीं, बल्कि उसकी अंतर्निहित क्षमताओं को निखारने आती हैं।

2. अभावों से निकलकर विश्व मंच पर इतिहास रचने वाले महापुरुष-

ऐतिहासिक तथ्य साक्षी हैं कि दुनिया के महानतम व्यक्तित्व किसी राजप्रासाद में नहीं, बल्कि अभावों की कुटिया में गढ़े गए हैं। भौतिक संसाधनों की कमी कभी भी प्रतिभा और दृढ़ इच्छाशक्ति के आगे रोड़ा नहीं बन सकती। भारत रत्न डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम: रामेश्वरम के एक अत्यंत साधारण परिवार में जन्मे, जहाँ उन्होंने बचपन में समाचार पत्र तक बेचे। अपनी निरंतर अध्ययनशीलता, ईमानदारी और लगन के बल पर वे भारत के शीर्ष मिसाइल वैज्ञानिक और भारत के ११वें राष्ट्रपति बने।

अब्राहम लिंकन (अमेरिका के १६वें राष्ट्रपति): एक गरीब परिवार में लकड़ी के केबिन में जन्मे लिंकन के पास पुस्तकें खरीदने के पैसे नहीं थे। वे दूसरों से पुस्तकें उधार माँगकर स्ट्रीट लाइट की रोशनी में पढ़ते थे । उसी अध्ययनशीलता ने उन्हें अमेरिका का सबसे महान राष्ट्रपति और दास-प्रथा का उन्मूलक बनाया।

माइकल फैराडे (महान वैज्ञानिक): एक गरीब लोहार के पुत्र, जिन्होंने एक जिल्दसाज़ (Bookbinder) की दुकान पर काम करते हुए विज्ञान की पुस्तकें पढ़ीं। अपनी अदम्य जिज्ञासा के बल पर उन्होंने 'विद्युत-चुंबकीय प्रेरण' (Electromagnetic Induction) का आविष्कार किया, जिसने आधुनिक विद्युत क्रांति की नींव रखी।

डॉ. भीमराव आंबेडकर: अत्यधिक सामाजिक विषमताओं और निर्धनता के बावजूद उन्होंने ज्ञानार्जन का कठिन मार्ग चुना। वे ९ भाषाओं के ज्ञाता बने और भारत के संविधान निर्माता के रूप में अमर हुए।

लाल बहादुर शास्त्री: जिन्होंने अभावों के बीच नदी तैरकर स्कूल की पढ़ाई पूरी की और आगे चलकर "जय जवान, जय किसान" के स्वाभिमान से देश को दिशा दी।

3. उपलब्ध संसाधनों का सदुपयोग एवं स्वाध्याय की महत्ता-

विद्यालय स्तर पर प्राप्त होने वाली सुख-सुविधाओं, पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं और खेल-कूद के साधनों का विवेकपूर्ण एवं सर्वोत्तम सदुपयोग करना प्रत्येक विद्यार्थी का परम कर्तव्य है । केवल निर्धारित पाठ्यक्रम की पुस्तकों तक सीमित रहने वाला ज्ञान एकांगी होता है

स्वामी विवेकानंद ने ज्ञान और शिक्षा का वास्तविक मर्म प्रस्तुत करते हुए कहा था:

"शिक्षा मनुष्य के भीतर पूर्व से ही विद्यमान पूर्णता की अभिव्यक्ति है। यदि शिक्षा केवल जानकारी एकत्र करना होती, तो पुस्तकालय दुनिया के सबसे बड़े संत होते।"

"उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। हजार बार गिरो तो हजार बार फिर उठो।" विद्यार्थियों को महापुरुषों की जीवनियाँ, आत्मकथाएँ, कालजयी साहित्य और यात्रा-वृत्तांतों का अनुशीलन करना चाहिए, जिससे उनके बौद्धिक क्षितिज का विस्तार हो सके।

4. ज्ञान और भाव का सम्मिश्रण: मस्तिष्क एवं हृदय का संतुलन परिपूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण के लिए बौद्धिक सुदृढ़ता (Cognitive Strength) के साथ-साथ भावनात्मक सुदृढ़ता (Emotional Strength) अनिवार्य है। केवल तीव्र बुद्धि व्यक्ति को चतुर बना सकती है, परंतु महानता हृदय की करुणा और संवेदना से ही प्राप्त होती है।

ज्ञानात्मक एवं भावनात्मक संतुलन: आधुनिक मनोविज्ञान में ज्यां पियाजे (Jean Piaget) का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत तर्कशक्ति को रेखांकित करता है, वहीं डेनियल गोलमैन (Daniel Goleman) का सांवेगिक बुद्धिमत्ता (EQ) सिद्धांत यह प्रमाणित करता है कि जीवन की वास्तविक सफलता में बुद्धि-लब्धि (IQ) से अधिक योगदान भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EQ) का होता है।

स्वामी विवेकानंद का त्रिसूत्र: स्वामी जी कहते थे— "हृदय जो महसूस करे, मस्तिष्क जो सोचे, और हाथ जो कर्म करे।" ज्ञान और संवेदना का यही सम्मिश्रण एक सामान्य बालक को महान नागरिक बनाता है।

5. अंतर्निहित शक्ति का जागरण और समय का सदुपयोग-

विद्यार्थी जीवन ही वह स्वर्ण काल है जहाँ चरित्र, संकल्प और भविष्य की नींव रखी जाती है। इस अवस्था में अपार ऊर्जा और असीम संभावनाएँ निहित होती हैं। आवश्यकता केवल इस बात की है कि विद्यार्थी अपनी सोई हुई चेतना को पहचानें, अनैतिक व गलत मार्गों का त्याग करें और अपनी ऊर्जा का प्रयोग राष्ट्र निर्माण में करें।

कविवर सोहनलाल द्विवेदी की यह कालजयी पंक्तियाँ विद्यार्थियों में अटूट आत्मविश्वास भरती हैं:

"असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ कर, मत भागो तुम।"

संकल्पबद्ध आह्वान- केंद्रीय विद्यालय संगठन के इस पावन प्रांगण में आपको जो अवसर, उत्कृष्ट मार्गदर्शन और वातावरण मिला है, उसका पूर्ण निष्ठा के साथ सदुपयोग करें। क्षणिक प्रलोभनों से दूर रहकर अपने शैक्षणिक, नैतिक और सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाएँ। अपनी परिस्थितियों या अभावों को कभी अपनी कमजोरी न बनने दें, बल्कि उन्हें अपनी शक्ति बनाकर सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करें। आप केवल एक छात्र नहीं, बल्कि एक प्रबुद्ध, सशक्त और समृद्ध भारत के स्वर्णिम भविष्य के शिल्पकार हैं।

पवन कुमार जैन
उप प्राचार्य

पश्य बाल.....



पश्य बाल आकाशम्
अनन्तम् अनन्तम् ॥

पश्य बाल भास्करम्
अतिचण्डम् अतिचण्डम् ॥

पश्य बाल चन्द्रमसम्
सुशीतलम् सुशीतलम् ॥

पश्य बाल सागरम्
विशालम् विशालम् ॥

पश्य बाल कृष्णघनम्
जलपूर्णम् जलपूर्णम् ॥

पश्य बाल विद्युतम्
अतिचपलाम् अतिचपलाम् ॥

पश्य बाल इन्द्रधनुः
चित्रितम् चित्रितम् ॥

पश्य बाल मातृमुखम्
स्नेहमयम् स्नेहमयम् ॥

उमंग सिंह

कक्षा-8वीं स

भाषायाः गौरवम्

संस्कृतं मधुरं दिव्यं, ज्ञानदीपं प्रकाशकम्।
वेदानां मूलभाषा च, संस्कृतिस्तेन रक्षिता ॥
धीराणां वाणी पुण्या सा, ऋषीणां हृदयंगमा।
गीर्वाणवाणी सा धन्या, सर्वभाषासु गौरवा ॥
पठामः संस्कृतं नित्यं, वदामः संस्कृतं सदा।
ध्यायामः संस्कृतं सम्यक्, भाषा भवतु नः प्रिया॥

लक्षिता राठौड़
कक्षा-8वीं 'स'

प्रकृतिः अस्माकं जीवनम्...



"प्रकृतिः जीवनस्य महती पाठशाला अस्ति। प्रभाते सूर्यः नूतनाम् आशां ददाति, शीघ्रं प्रकाशं वितरति। पुष्पाणि वायौ सुगन्धं प्रसारयन्ति, नानावर्णैः मनसि हर्षं जनयन्ति। पक्षिणः मधुरगानेन आकाशं पूरयन्ति, मनः शान्तं भवति। नद्यः पर्वतात् आरभ्य ग्रामान् अतिक्रम्य क्षेत्राणि सिञ्चन्ति, सर्वेषां जीवनं पोषयन्ति। वृक्षाः शीतलां छायां दत्त्वा श्रान्तानां विश्रान्तिं कुर्वन्ति। वर्षाकाले भूमिः सुजला भवति, कृषकाः हृष्टाः भवन्ति। हेमन्ते शिशिरः आगत्य जगत् शान्तं करोति, जनाः ऊर्णावस्त्राणि धारयन्ति, अग्निः च गृहे ऊष्माणं ददाति। एवं प्रतिक्षणं प्रकृतिः नित्यं पाठं पाठयति - जीवनं परिवर्तनशीलम्। अतः वयं सावधानाः, दयालवः, कृतज्ञाश्च भूत्वा प्रकृतिं रक्षेम।"

कार्तिकेय त्यागी
कक्षा-8वीं 'ई'

हास्यकणिकाः

शिक्षकः - भोः छात्र ! गृहकार्यं कुत्र अस्ति ?
छात्रः - महोदय ! मया तु गृहकार्यं कृतम् आसीत्।
शिक्षकः - तर्हि पुस्तके किमर्थं न दृश्यते ?
छात्रः - अहो ! तत् तु गृहे एव अस्ति।
शिक्षकः - तर्हि त्वं विद्यालयं किमर्थम् आगतः ?
छात्रः - गृहकार्यं गृहे त्यक्त्वा विद्यालयं रक्षितुम् आगतः।

निष्कर्षः
- गृहकार्यस्य भारः छात्रस्य महान् शत्रुः।

एकता शर्मा
कक्षा-8वीं 'ई'

मुंशी प्रेमचंदस्य परिचयः



मुंशी प्रेमचंदः हिन्दी-साहित्यस्य प्रसिद्धः महान् लेखकः आसीत्।
तस्य वास्तविकं नाम 'धनपतराय श्रीवास्तवः' आसीत्।
तस्य जन्म ३१ जुलाई १८८० तमे वर्षे वाराणसी-नगरे अभवत्।
प्रेमचंदः स्वकथाभिः सामान्यजनानां जीवनं सुन्दररूपेण प्रस्तुतवान्।
तस्य कथाः शिक्षाप्रदाः भवन्ति।
सः स्वकथासु दरिद्रताम्, कृषकाणां समस्याः, सामाजिकसमस्याः च दर्शयति।
तस्य भाषा सरला तथा रोचका आसीत्।
तस्य प्रमुखेषु उपन्यासेषु 'गोदान', 'सेवासदन', 'कर्मभूमि' च सन्ति।
तस्य प्रसिद्धासु कथासु 'ईदगाह', 'पूसस्य रात्रिः', 'द्वौ वृषभौ' च प्रमुखाः सन्ति।
मया प्रेमचंदस्य "ईदगाह" इति कथा पठिता।
सा कथा मह्यम् अतीव अरोचत।
मुंशी प्रेमचंदस्य निधनम् ८ अक्टूबर १९३६ तमे वर्षे अभवत्।
हिन्दी-साहित्ये तस्य योगदानं सदा स्मरणीयं भविष्यति।

भक्ति
कक्षाः८ 'ई'



योगस्य महत्त्वम्

"योगः कर्मसु कौशलम्"
योगः अस्माकं जीवनस्य महत्त्वपूर्णः भागः अस्ति।
योगाभ्यासेन शरीरं स्वस्थं भवति।
योगः मनःशान्तिं ददाति।
योगेन एकाग्रता वर्धते।
योगः अस्मान् तनावात् दूरं करोति।
प्रातःकाले योगाभ्यासः अतीव लाभदायकः भवति।
योगेन शरीरस्य नमनीयता वर्धते।
वयं प्रतिदिनं योगाभ्यासं कुर्मः।
स्वस्थशरीराय प्रसन्नमनसे च योगः आवश्यकः अस्ति।
योगस्य लाभाः
शरीरं स्वस्थं भवति।
मनः शान्तं भवति।
एकाग्रता वर्धते।
आलस्यं दूरं भवति।
आत्मविश्वासः वर्धते।

स्वाती , कक्षा-८'ई'

वृक्षस्य पुकारः



एकस्मिन् नगरे एकः बालकः आसीत्। तस्य नाम आरवः आसीत्। सः प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छति स्म। विद्यालयस्य समीपे एकः विशालः वृक्षः आसीत्। वृक्षे बहवः पक्षिणः निवसन्ति स्म।

एकदा आरवः वृक्षस्य समीपम् अगच्छत्। सः वृक्षस्य शाखां छेत्तुम् इच्छति स्म। तदा सः वृक्षस्य दुःखितं स्वरं श्रुतवान्।

वृक्षः अवदत् -"हे बालक ! मां मा छिन्धि। अहं भवद्भ्यः छायां, फलानि, पुष्पाणि च ददामि। अहं वायुम् अपि शुद्धं करोमि।"

आरवः वृक्षस्य वचनं श्रुत्वा लज्जितः अभवत्। सः अवदत् -

"क्षमस्व वृक्ष ! अहं कदापि वृक्षं न छिनद्मि। अहं वृक्षाणां रक्षणं करिष्यामि।"

ततः आरवः स्वमित्रैः सह अनेकान् वृक्षान् अरोपयत्। सर्वे बालकाः वृक्षाणां संरक्षणं कर्तुं संकल्पं कृतवन्तः।

केचन वर्षाः अनन्तरं तत्र सुन्दरः हरितः उद्यानः अभवत्। पक्षिणः प्रसन्नाः अभवन्। सर्वे जनाः शुद्धं वायुम् अनुभूतवन्तः।

शिक्षा :-

"वृक्षाः अस्माकं जीवनस्य आधारः सन्ति।

अतः वृक्षान् रक्षामः, अधिकान् वृक्षान् च रोपयामः।"

अंश शर्मा

कक्षा- 7 'द'

•उद्यम - अनुशासन - वैभवम्•



न च भाग्यबलेनापि सिध्यते जीवनं शुभम्।
श्रमेणैव हि लभ्यन्ते लक्ष्याणि सकलानि च ॥१॥

भावार्थ: भाग्य के भरोसे कभी भी जीवन सफल नहीं होता है।
मेहनत और परिश्रम से ही हम हमारे लक्ष्य प्राप्त करते हैं।

अनुशासनबद्धं यत् जीवनं सततं भवेत्।
तस्यैव कीर्तिः संसारे दीपवत् प्रज्वलिष्यति ॥२॥

भावार्थ: जो जीवन हमेशा अनुशासन के साथ चलता है, उसका नाम और सम्मान दुनिया में एक जलते हुए दीपक की तरह चमकता है।

गार्गी सारस्वत

कक्षा - 8th 'ई'

प्रकृतिसौन्दर्यम्



प्रभाते भास्करो देवः स्वर्णरश्मीन् प्रसारयन्।
जगत्सर्वं प्रबोधयति, तमः सर्वं विनाशयन्॥

मन्दं मन्दं वहत्येव शीतलो मधुरोऽनिलः।
पुष्पाणां गन्धमादाय हर्षयत्यखिलं जगत्॥

वृक्षेषु विहगाः सर्वे मधुरं कूजन्ति सर्वदा।
नद्यः शीतलतोयेन सिञ्चन्ति वसुधां शुभाम्॥

वृक्षान् रोपयेम सर्वे, नद्यः स्वच्छाः भवन्तु नः।
प्रकृत्या सह जीवेम, सुखिनः स्याम सर्वदा॥

करुणा शर्मा
कक्षा-8वीं 'ई'

संस्कृतम् - महापुरुषाणां विचाराः



(संस्कृत भाषा में महापुरुषों के प्रेरक विचार - शुद्ध रूप)

१. महात्मा गान्धी : "सत्यं वद, अहिंसां पालय, सर्वेषां हितं कुरु।"
अर्थ: सत्य बोलो, अहिंसा का पालन करो और सबका भला करो।

२. स्वामी विवेकानन्दः : "उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान् निबोधत।" / "उत्तिष्ठत, जाग्रत, लक्ष्यं प्राप्य न निवर्तत।"
अर्थ: उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।

३. गौतम बुद्धः : "मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।"
अर्थ: मन ही मनुष्यों के बंधन और मोक्ष का कारण है।

४. चाणक्यः : "विद्या मनुष्यस्य सत्यं धनम् अस्ति।"
अर्थ: विद्या ही मनुष्य का सच्चा धन है।

५. डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलामः : "महान् स्वप्नाः महान् विचारान् जनयन्ति।"
अर्थ: महान सपने महान विचारों को जन्म देते हैं।

६. सुभाषचन्द्र बोसः : "देशसेवा एव जीवनस्य परमं कर्तव्यम्।"
अर्थ: देश की सेवा ही जीवन का परम कर्तव्य है।

७. रवीन्द्रनाथ ठाकुरः : "यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्, तत्र मानवता वर्धते।"
अर्थ: जहाँ पूरा विश्व एक घोंसले (परिवार) के समान हो जाता है, वहाँ मानवता का विकास होता है।

गौरांगी शर्मा
कक्षा-7वीं 'ब'

कला - साधना : जीवनस्य सौन्दर्यम् अस्माकं संस्कृति च



'साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।' इति नीतिशतकस्य प्रसिद्ध-उक्ति अस्मान् स्मारयति यत् कला विना मानवजीवनं सर्वथा अपूर्णम् अस्ति। अस्मिन् संसारे कला न केवलं मनोरंजनस्य साधनम्, अपितु आत्माविष्कारस्य, भावनानां, संस्कृतिश्च अभिव्यक्तये सर्वोत्तमं माध्यमम् अस्ति।

कला मानव मनसि सौन्दर्यस्य, संवेदनायाः, रचनात्मकतायाः च संचारं करोति। यदा वयम् एकाग्रचित्तेन कला-साधनां कुर्मः, तदा अस्माकं मनः शान्तिं प्राप्नोति, चिन्ता च दूरीभवति। कला न केवलं सौन्दर्य सृजति, अपितु जीवनस्य कठिन-क्षणेषु धैर्यं धैर्यवता च जीवन-मूल्यानि अपि पाठयति। आधुनिक-युगे, यत्र सर्वत्र भौतिक-प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी च व्याप्ता अस्ति, तत्र कलायाः स्थानं महत्तरं भवति। कला मानवेषु करुणां, सहानुभूतिं, मौलिक-विचारान् च जागर्ति। अतः सर्वैः छात्रैः स्वाध्ययनेन सह कस्याश्चित् कलायाः अभ्यासेन स्व-प्रतिभायाः विकासः अवश्यमेव करणीयः। कलायाः संरक्षणं संवर्धनं च अस्माकं सर्वेषां नैतिकं कर्त्तव्यम् अस्ति।

भुवि श्रीवास्तवः
कक्षा - द्वादशी 'ब'

अहं भारतस्य बालिका अस्मि...



अहं भारतस्य बालिका अस्मि, नाहं भीरुः कदाचन।
पुस्तकं मम खड्गोऽस्ति, लेखनी चास्त्रं मम॥
गणितं मे प्रियं मित्रं, विज्ञानं मम चक्षुषी।
प्रश्नेन पन्थानं पश्यामि, उत्तरेण च लक्ष्यम्॥
नाहं शोभां याचे, नाहं रत्नानि वै याचे।
विद्यामेव अहं याचे, या मे भूषणं भवेत्॥
'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः'
इति वेदवचः सत्यं, तद् वाक्यं साधयाम्यहम्॥
पठिष्यामि, लेखिष्यामि, साधयिष्यामि स्वप्नकम्।
भविष्ये च अहं काले, भारतस्य भवामि गौरवम्॥

शिक्षावाक्यम् ➜ विद्या एव बालिकायाः भूषणम्।

मुस्कान
कक्षा-8वीं 'स'

❀ BELIEVE IN YOURSELF ❀

A poem about courage • hope • confidence



When the road is hard and long,
Keep your heart brave, keep it strong.
If you fall, then rise once more,
Every failure opens a door.
Do not fear the darkest night,
Keep on walking toward the light.
Small steps can take you far,
Just believe in who you are.
Dream with hope and work each day,
Never let your courage fade away.
For those who try and never quit,
Can turn their dreams to reality!

✨ THOUGHT ✨

"Believe in yourself, because every great journey begins with one small step." ✨

Lavanya Godiya
Class: 7th E

OH DEAR TREE !



Oh dear tree !
You give many things in free.
You are life saver ,
You are oxygen giver.
You give food,
You give wood.
You help everyone,
But never hurt anyone.
You provide shade,
But sadly, human cut you with blade.

ADITYA PRATAP SINGH GURJAR
Class: 8th 'B'

STORY: The Room With The Blue Light



Aarav was the topper of Class 12. His world had shrunk to the four walls of his room and the blue light of his mobile phone.

His morning started with an Instagram story and his night ended with YouTube Shorts. He had 2,400 followers, but there was no one at home to talk to him. When his mother called him for dinner, he would say without even looking up, "Later." Even when he was with his friends, he was on his phone.

One day his school announced — "For one week, 'Digital Detox Challenge' — the student who can live seven days without Social Media will get a special place in the e-magazine."

Aarav laughed and said, "That's a piece of cake." He accepted the challenge.

Day One: Restlessness. Every 5 minutes his hand went to his pocket. It felt like he was missing something. He kept pacing around the room.

Day Two: He opened his cupboard after 2 years. There lay his childhood carrom board, unfinished colors, and the books given by his grandfather. He dusted them off.

Day Three: In the evening, he went to the terrace for no reason. His father was sitting there. For the first time, both of them just looked at the sky, without any work. His father told him how he also used to run behind kites in his childhood. After 3 years, Aarav looked into his father's eyes.

Day Five: He chopped vegetables with his mother in the kitchen. His mother cooked his favorite dal. The taste in the food was something that was not there in any restaurant photo.

Day Seven: When he switched his phone back on, there were 387 notifications. But he was in no hurry now. He realized — in the room with the blue light, he was alone, and in the room without the light, the whole world was with him.

He wrote his story for the e-magazine. He gave it the title — "I was alone, surrounded by 2,400 people."

His story won the first prize. Because it was not just a story, it was the truth of all of us.

Moral- Social media was made to connect us, but we have made it a way to be alone. Life is not on the screen, it is beyond the screen.

Daksh Singh
Class -12 A

Contentment is the greatest wealth



Kavi and Jayan were two farmers who lived in a small valley. Kavi was poor but always happy with his small hut and sweet mango tree. Jayan was rich but always greedy for more.One day, a merchant offered to buy Jayan's land for gold. Jayan sold everything, chasing endless wealth, but he lost his peace sleeping over his gold sacks. Meanwhile, Kavi happily shared his sweet mangoes with children, enjoying the cool breeze.When a thief stole Jayan's gold, Jayan cried in despair. Kavi smiled and shared his food, realizing that contentment is the greatest wealth. Moral-Contentment is the greatest wealth (Santosh hi param dhan hai).True happiness comes from appreciating what you have, not from chasing endless desires.

Ayesha Jain
Class -7th E

TECHNOLOGY - A TOOL OR A MASTER?



Technology has become an important part of our daily lives. We use it to study, communicate with others, find information, play games, watch videos and even learn new skills. The internet has made knowledge available at our fingertips. Technology has certainly made many things easier and faster.

But have we ever thought about how much time we spend with it?

A student may sit down to study with a phone nearby. A single notification appears, and suddenly we are checking a message. One video leads to

another, and before we know it, a lot of time has passed. Sometimes, we are sitting with our family or friends, but everyone is looking at their own screens. We are connected to people all over the world, yet we may forget to talk to the people sitting next to us.

Social media can also affect the way we see ourselves. We often see other people sharing their best moments online and may start comparing them with our own lives. We should remember that what we see on a screen is only a small part of someone's life.

Technology is not the enemy. In fact, it can be a wonderful friend when we use it wisely. Artificial intelligence, for example, can help students understand difficult topics, explore ideas, solve problems and learn new things. But we should not let technology do all our thinking for us. Our own ideas, imagination and curiosity are still important.

So, should we stop using technology? Of course not! Technology is a useful tool, and the future will bring even more exciting inventions. What matters is that we decide how to use technology instead of allowing it to decide everything for us.
Sometimes, the best thing we can do is simply put the phone down. Talk to a friend. Play outside. Read a book. Spend time with family. Look around and enjoy the real world—not just the one on a screen.
Technology can make our lives better, but it should never take away the things that make our lives meaningful.
After all, technology was created by humans to serve us. We should make sure that we remain the ones in control, rather than becoming so dependent on technology that it begins to control us. Technology should remain our tool, not become our master. The future is in our hands—let us use technology wisely, without letting it use us.

Anveshna Sharma
Class: 8 B

The Joy of Reading



Class : 7th

Inside a book, a world can hide,
With tales of dragons, far and wide.
Of knights and queens, and ships at sea,
And places where you long to be.



You'll travel through the starry night,
To distant moons with beams of light.
Or dive beneath the ocean's blue,
To see the wonders hiding from you.







So open up a book today,
And let your mind just slip away.
For knowledge, magic, and so much more,
Are waiting for you to explore.

Devansh Dube
Roll No. 33
Class : 7th

Outdoor Games

Outdoor games are a great way to stay fit, healthy and happy. They are played in open spaces like parks, playgrounds and fields. Games such as football, cricket, basketball, volleyball, running and kho-kho help us build strength, improve our fitness and teach us teamwork. These games also keep us away from mobile phones and screens, and help us enjoy fresh air and sunlight. Playing outdoor games not only makes our body strong but also refreshes our mind and brings joy to our life.







Play • Stay Fit • Be Happy

MADHAV SHUKLA

CLASS- 7TH E



Trees

Trees are tall and green,
They give us fresh air,
They give us shade,
And make our world fair.



Trees give us fruits,
Flowers and wood,
They are home to many birds
And animals too.

Let's plant more trees,
And keep them safe,
For a cleaner, greener
And brighter tomorrow.

Tarun Narwariy
Roll No. 41
Class - 7E

A SKY OF MY OWN



Very storm will pass away,

If not today, then someday.
So I'll keep walking, step by step,
And never let my dreams fade away.

I may be young, my dreams are wide,
With hope and courage by my side.
The road may twist, the path may bend,
But I'll keep going till the end.

I'll learn, I'll grow, I'll rise again,
Through every loss, through every pain.
For dreams are not just meant to see—
They're meant to become reality.

Today I stand beneath the sky,
Tomorrow, I'll learn how to fly.
I won't wait for destiny to call—
I'll build my wings, and rise above it all.

Shreshthi Bhadoriya
Class: IX A

❀ TRUE FRIENDS ❀



Friends are not just friends to us,
They are our partners on the way.
They walk beside us step by step,
And brighten up our every day.

When we are in trouble or in need,
They always lend a helping hand.
They share our smiles and wipe our tears,
And help us when we cannot stand.

Friendship is not just being friends,
It is a beautiful bond of care.
A true friend stays beside us,
Through every joy and every tear.

With friends, our life feels brighter,
With laughter, love, and cheer.
A true friendship is a precious gift,

That we will always hold dear.

✨ THOUGHT ✨

"A true friend is a bond beyond words — a gift the heart never forgets."

Manavi Kumari Meena

Class: 7th E

MY SCHOOL

A poem about learning • growth • pride



KV is a place where dreams begin to take flight,

Where every new lesson brings fresh delight.

Teachers inspire us to learn and explore,

And help us become better than before.

We read, we create, we play and we grow,

Building confidence wherever we go.

KV is our pride, our learning space,

A school we cherish with joy and grace!

✨ **THOUGHT** ✨

"Learn, Grow, Shine — every day at school is a step toward a brighter tomorrow."

Vaibhav Ratna

Class: 7E

Story of a Sensitive but Courageous Girl



There was a little girl who was just six years old. Her name was Shanaya. She was very sensitive, and even a slightly loud voice could make her feel scared. Her family members, teachers, and everyone around her often told her not to be so sensitive. They said she should face life's challenges bravely, but Shanaya found it difficult to change this habit on her own.

One day, Shanaya and her family went on a weekend trip to a beautiful hill station. They spent the day laughing, playing, and enjoying the fresh air together. In the evening, after dinner, they went for a walk because the weather was pleasant and the view was breathtaking.

Later that night, Shanaya woke up to refill her empty water bottle. The cool breeze and the beautiful night sky attracted her outside. While enjoying the view, she walked too far and suddenly realized she was lost.

At first, Shanaya cried because she was scared. But then she thought, 'If I keep crying, I will never find my family.' She took a deep breath, became brave, and started looking for the way back.

With patience and courage, Shanaya found her hotel and reunited with her family. That night she learned an important lesson: being sensitive is not a weakness. Real courage means moving forward even when you are afraid. From that day on, Shanaya decided to lead her life with confidence and hope.

Suaaliya Uddin
Class: 8th B

Bharat ke Veer
{Heroes of India}



Heroes are not those who act in a film, Real heroes are those who protect us 24/7, # The Soldiers Of India. These are not just people who defend our country.....they are heroes who sacrifice their holidays, youth, and even sacrifice their life. There are many soldiers in India who sacrificed their life at a very young age, just to defend their country.

Soldiers work for their country 365 days a year, 30 days a month and 24 hours a day, without a single complain. They are so determined that, whether it is a sweating day in Rajasthan or an ice-cold day in Kashmir , they never stop working.

But one question remains... Why don't they take a break or rest ?
Because they love their country and want to protect it till the last breath.
When Indian Airforce, Indian Army and Indian Navyunite nobody can beat them.

As, The soldiers work so hard to defend our country, we should honour them by respecting them, adding values like ; dedication and courage in our daily lives, and giving tribute to the soldiers who let there life go, for us....

JAI HIND JAI BHARAT !!

Anusha Anukul Prabhakar
Class 8B

Defining life



Life is like crawling,

a way of learning.

It's a room of obstacles,

which defines our struggles.

Life is like walking,

a way of feeling.

It's a road of devotion,

which defines our expression.

Life is like running,

a way of pushing.

It's a track of ambition,

which defines our determination.

Life is like climbing,

a way of rising.

It's a cliff of thrill,

which defines our will.

Astha Kushwah

Class-11th C

School Memories



Every student has a special talent of finishing homework five minutes before the teacher arrives!

We all know that moment when the teacher says, "Take out your homework!"

Suddenly, everyone starts searching their bags. "Ma'am, I did it! I think I left my notebook at home!" and sometimes, we just sit quietly and hope the teacher forgets.

Before an exam, we say:

"I will study from today."

"Then we study for ten minutes, take a small break, check our phone, eat something, and suddenly it is bedtime."

Let's not forget the school bell.

The moment the final bell rings, everyone suddenly becomes an Olympic runner. Bags are packed in seconds, chairs are moved,

And everyone is ready to leave.

But somehow, when there is a holiday, we start missing our friends.

We miss sitting together, laughing at silly things, sharing snacks, talking during breaks, and even complaining about homework.

May be school is not only about books, marks and exams.

It is also about friendship, laughter, late talks, memories and growing up together.

One day, we may leave these classrooms and start a new chapter of our lives.

And then we may look back and realize...

The days we once called "boring school days" were actually some of the most beautiful days of our lives.

So, until that day...

let's study a little, laugh a lot, make memories, and survive school together.

Khushi Sharma

12th 'D'



The Minute Between

I sat at my work desk
gazing at the clock
listening to the tick-tick
when it suddenly stopped
The clock whispers
every night at 11:59
I didn't know what it said
but I felt the morning behind
The strange mixture of hope and exhaustion
who waited too long
The quiet of ache of dreams
left buried too long
longing of words
that were never spoken
And the silent grief
that was never healed
The whispers disappear
Then, at twelve 'o clock
the clock begins again
And I heard my name
whispered through shadows
calling me closer
to reality again
And then I realised
we never missed a minute
We just gave it away
to the darkness
and never realised.

Devyani,11th D

From the future

I come from the future

To tell you how it is

We have no water left

We cannot grow crops

We have no animals left

The technology we used

For advancement took our water

Drop by drop, litre by litre

And since at first few suffered

Not many

But now we have no water left

We cannot grow, we cannot live

From the basic to advance

From stupid to smart,

We all need water

I come from the future

To tell you how it is

We have no water left

But you do

So, save it

Because I come from a future

Where nothing is left

Aarohi Singh

Class-11th D

"From Kirana to Cart"

'How Quick Commerce is Rewriting India's Neighbourhood Economy'

You are sitting at home. You realise you are out of milk. You open an app. Ten minutes later, someone is at your door.

What exactly happened in those 10 minutes? A rider travelled through traffic. A store stocked the product. A warehouse worker picked it. Algorithms predicted demand. Investors financed the network.

And somewhere nearby, a shopkeeper who has sold that same packet of milk for fifteen years may have watched his customer walk past his shutter and order it from a screen instead.

Why consumers love 'quick commerce'? Thousands of reasons. But main are, more product variety, anytime availability, discounted prices, a very digital infrastructure, home delivery and more consistent inventory.

No doubt appears to question why not to use it. Perhaps the challenge is not to stop technological progress, but to ensure that technological progress does not simply replace one form of inequality with another.

The disappearing shop ~ When a neighbourhood shop disappears, what exactly have we gained - and what we lost?

A shopkeeper pays rent, electricity, staff, stock inventory, and then he waits for customers and sells one packet. On the other hand, apps like Blinkit, Zepto are providing the convenience which a shopkeeper can't. It changes who owns the customer.

For decades, the neighbourhood Kirana shops wasn't merely a place where goods were sold. It was part of the social and economic structure of a neighbourhood. The shopkeepers knew customers personally, often extended informal credit, adjusted quantities, accepted small purchases and sourced products according to local demand.

'Quick commerce turns that relationship into a platform-based transaction.'

The question is not whether quick commerce innovative. The question is what its innovation is being used to optimize.

If India's brightest entrepreneurs and largest venture capital are primarily being directed towards making consumption faster, are we solving India's deepest problems - or merely making urban life more convenient?

The real matter is much bigger, it isn't whether we can deliver milk in ten minutes. It is whether we can build an economy worth living in ten years from now, are we really innovating things to take weaker sections up front or providing conditions to sustain their life in their conditions.

You should ask yourself this question

Atharv Kumar

Class-11thD

Beyond Every Name



No questions does the colour ask

of souls that stand revealed,

No brush demands a name or caste

It paints what a heart concealed.

A canvas never learned our caste,

nor asks the name we bear

But in our hearts,

It always lay its silent prayer.

A stroke may tell of someone's grief,

some of their hidden pain maybe

In a shade, a tint of blue,

Or a deep vermilion sea.
A lone line may convey some love
No mortal tongue could show,
and something broken in the line,
may speak of the wounds we know.
The moment an artist's hand meets brush,
The world is all unmade.
No caste is left, nor any god
No lines of difference are laid.
Perhaps that's why a stranger
can stand in front of your art,
and beneath your colours,
He may find a reflection of his heart.
But art will keep on reaching out
To what no border needs,
It asks not what you are or might be,
But only asks you to feel it
and let your heart breathe.
Art keeps the mortal soul live on,
Later when the artist is gone.
The world breathes when the creation starts.
And it is nothing without the art.

Kamakhya Agarwal
Class-12th 'E'

The Changing Face of Tourism: More Than Just Vacations



Whenever someone mentions the word "tourism," the first picture that pops into our heads is usually packing bags for summer break, clicking aesthetic pictures for Instagram, or rushing between famous monuments before the entry gates close. For the longest time, I used to think tourism was just an industry of hotels, scenic viewpoints, and souvenir shops. But looking closer at how travel actually works today—especially in a diverse country like ours—it is obvious that tourism has become something much deeper. It is not just about leisure anymore; it is about how people, cultures, and economies survive and connect.

Economically, tourism is a massive powerhouse. It isn't just large airline companies or fancy five-star resorts making a profit. A single traveller walking down a street supports an entire chain of people: the local cab driver, the small dhaba owner making hot parathas in the morning, the licensed tour guide explaining local folklore, and the artisan selling handmade pottery. In regions like Rajasthan, Goa, or Himachal Pradesh, entire communities depend directly on the flow of visitors. It generates direct and indirect employment on a scale few other sectors can match, bringing livelihood to remote corners where traditional office or factory jobs simply do not exist.

Beyond money, tourism acts as a cultural bridge. When we read about a community’s traditions or regional history in a textbook, it feels distant and abstract. But when you visit a village homestay, eat traditional food prepared by local families, and listen to elders share stories of their heritage, that culture becomes real. This kind of exchange builds mutual respect. It also gives communities a strong incentive to preserve their heritage—ancient temples, traditional dance forms, local handicrafts, and folk music that might otherwise fade away in an overly modernized world.

However, unchecked tourism has a severe dark side that our generation cannot afford to ignore. Over-tourism is ruining some of the most beautiful places on Earth. Every holiday season, we see news clips of endless traffic jams in mountain towns, overflowing garbage dumps in fragile valleys, and severe water shortages in popular hill stations because commercial resorts consume resources meant for local residents. The idea of "taking only memories and

leaving only footprints" often ends up forgotten, replaced by plastic bottles strewn across trekking trails and noisy crowds disturbing wildlife habitats.

This brings us to the most critical need of our time: sustainable and responsible tourism. As students and future travellers, our mind-set needs to evolve. Tourism shouldn't be about treating a destination like an amusement park built solely for our amusement. It should be about respect. Opting for public transport or walking, choosing eco-friendly homestays over massive luxury chains, respecting local customs, and ensuring our money directly helps native shopkeepers are small decisions that make a huge difference. Governments and travel boards also need stricter carrying capacity rules so destinations aren't pushed past their breaking points.

In the end, traveling is one of the best forms of practical education you can ever get. It pulls you out of your comfort zone, challenges your preconceptions, and makes you appreciate how interconnected the world is. But the privilege to explore this world comes with the responsibility to protect it. If we travel with curiosity and care rather than carelessness, tourism will remain what it was always meant to be: a force that enriches both the traveller and the host.

Ankush katroliya

Class-12th E

The true spectrum of Humanities: Beyond the Rote-learning myth



Take a moment and think about the first thing that comes to your mind whenever you hear the terms “humanities” or “arts stream.” Let me guess: contemplating social studies inadvertently shifts our thinking to historical dates, geographical landscapes, political scenarios, or the economic context of our contemporary world. As a humanities student, I frequently encounter the misconception that it is merely a theoretical stream based on rote-learning methods. Even in the early days of pursuing it, I used to hold the same belief. However, as I navigated through the different stages of studying it, my perspective underwent a complete transformation. I realized the profound significance of the humanities in our daily lives and came to understand why it should definitely be studied by everyone. Humanities encompasses domains like history, sociology, geography, political science, philosophy, psychology, economics, art, and culture. It comprises a diverse range of academic disciplines. Moreover, these subjects are not discrete; rather, they are deeply intertwined and form entirely new fields when studied in conjunction with one another. The humanities provide us with an empirical, structural, pragmatic, and analytical foundation that transforms our abstract ideas into real-world solutions. It develops our ability to question the “what, why, where, and how” of the world, enabling us to reason critically on the basis of facts and figures. Furthermore, it instils a deeper understanding of cultural diversity, which is incredibly beneficial for our collective future. It opens doors to high-demand fields like public policy, data interpretation, international affairs, economics, and civil services by sharpening our critical thinking, communication skills, and ethical insights. Ultimately, it cultivates fundamental human values like empathy and kindness toward cultural diversity, enabling us to acknowledge the struggles of others. Core subjects like geography and history explore past events and the evolving relationship between humans and the Earth, tracing how they have shaped the course of human evolution. Political science examines governmental systems, public policies, and civic duties that ultimately benefit society. Meanwhile, psychology and sociology investigate human behaviour, mental processes, and social structures, while languages develop imperative communication skills. This knowledge empowers us to debate and reflect on actions that impact our world. Overall, the humanities develop us holistically by cultivating our intellectual, cultural, social, and analytical faculties. It holds lifelong value that remains relevant in all spheres of existence. Therefore, it must be encouraged and embraced with great passion.

Riya Singh Indoriya

Class - 12th D

Education Never Gets Wasted



It is natural for a student on the path to fulfilling their goals to ponder questions like: Will the education I am receiving everyday lead to success? What if I fail? Will I have to face educated unemployment? Overall, these questions seed doubts about whether one's education will ultimately go to waste. Such uncertainty can erode courage and gradually slow down a student's progress. These doubts generally arise when a student loses sight of why they ate pursuing an education in the first place. Education is not merely meant for learning facts, passing exams, and reaching a specific career target. Its primary motive is to develop an individual's full potential, shape a noble character, and prepare them to contribute meaningfully to society. An unemployed, educated person can often offer better and more logical insights than an employed, ignorant one. Education serves as a guiding light for every step in life.We have a great example in Japan, which transformed from a feudal society into a modern, industrial powerhouse by placing mass education at the absolute core of its national development strategy. Their society deeply respects learning, self-improvement, and practical skills as vital virtues, achieving nearly a 100% literacy rate. In fact, Dr. B.R. Ambedkar Ji wisely said, "Tumhare pairo me jute bhale na ho, hatho me kitaab jaroor honi chahiye!" (Even if you don't have shoes on your feet, you must have a book in your hands!). Dr. A.P.J. Abdul Kalam Ji also said, "Learning gives creativity, creativity leads to thinking, thinking provides knowledge, and knowledge makes you great." Furthermore, we have countless examples right here in India where education has positively transformed lives. Hence, education, knowledge, and skills always compound and eventually find a purpose, even when they do not yield immediate or expected results. We must never forget that we do not acquire an education solely for our goals, but to become a better version of ourselves. We should always strive to learn something good and new, rather than obsessing over immediate outputs or results. There is no age limit for learning—as long as we keep learning, we keep growing.

Mohit Lanjewar

Class11th 'A'

What if Smartphones Disappeared for a Day?



Imagine waking up and your smartphone is gone. Your phone has stopped ringing—no notifications, no messages, and no social media. At first, it might feel strange, but maybe that silence can teach us something. Smartphones are a part of our daily lives. We use them for study, alarms, entertainment, and shopping. But they occupy too much of our time. Sometimes, we forget to notice the people and the world around us. If smartphones disappeared for one day, families might sit together and talk. Children might play outside, and friends might meet without checking notifications. We could read books, help our parents, and enjoy nature. Would you be able to spend a day without scrolling? This day would remind us how dependent we are on technology. A day without phones may be frightening, but it could also be refreshing. So, if your smartphone disappeared tomorrow, would you feel lost, or would you finally look up and rediscover the world?

And yet after everything, what would you have?

Suryansh Yadav
Class 11th A

The Power of Curiosity



Curiosity is one of the most powerful qualities a student can have. It begins with a simple question—"Why?" or "How?" A curious mind does not accept everything without understanding it. Instead, it observes, asks questions, explores and learns.

Every great discovery in history began with curiosity. Scientists questioned the world around them, explorers wondered what lay beyond the known, and inventors imagined possibilities that others had never considered. Curiosity encourages us to look at ordinary things in extraordinary ways.

For students, curiosity can make learning more interesting. Instead of simply memorising a scientific formula, a curious student may ask why it works. Instead of only reading about history, they may wonder what life was like for people during that period. Such questions turn education from a task into an adventure.

However, curiosity also requires patience. Not every question has an immediate answer. Sometimes we need to read, experiment, discuss and even make mistakes before we understand something. That is not failure—it is part of learning.

In today's world, information is available everywhere. But having information is not the same as having knowledge. Curiosity teaches us to question information, think independently and search for reliable answers.

Therefore, we should never be afraid of asking questions. A question may seem small, but it can open the door to a completely new idea.

Stay curious, keep asking, and never stop learning. The world still has countless
questions waiting for someone to ask them.

Prince Singh
Class-10th D

India's Youth: The Force Behind Tomorrow



India is a nation where more than a quarter of its population belongs to the youth. Youth are those who constantly experiment, possess an urge to create something new, and have the determination to pursue their goals without giving up midway. They possess the energy, curiosity and courage that can become the backbone of a growing nation. So, if India has such a large and energetic youth population, why can't our youth contribute more towards the country's progress? According to the Government of India, around 27.2% of India's population is young, defined as people between the ages of 15 and 29. This represents an enormous pool of energy, creativity and potential, yet much of this potential remains untapped.

Having this large population of youth is an asset for India, but assets alone cannot shape a strong nation. A strong nation is shaped by skills, creativity and proper channelizing of energy of its youth, especially in sectors like technology. In the changing world, success does not depend only on marks, degrees or passing examinations, but also on skills, creativity and critical thinking. Therefore, we have to prepare our youth in a way that enables them to use these skills in their lives and contribute to the growth of the country.

Skills are just skills and nothing valuable as long as the youth don't use them in solving the problems so the skills education is our first step. We have to learn how to use these skills and the modern technology in todays world is vast and youth should know how to use it and how to use that smartly and todays youth should also be aware about the origin and the right way of use it not just clear copy and paste the work done by the A.I and this is the truth what most of the youth of our India is doing.

"Technology should be a tool in our hands, not a substitute for our thinking"

4. Only being skilled is not what India needs, India demands skilled as well as responsible youth. Without the sense of responsibility an invaluable asset, that is youth will waste itself. This sense will enable them perform the task of building a nation.

“The youth have the energy and potential to bring change, but that potential becomes meaningful only when it is guided by responsibility.”

Youth does not only includes the people more than the age of 18; it also counts the people of less than 18 the teenagers of 15 years to 18 years and they are not professionals, or some leaders. They are students who are still learning and they are in the age where positive habits and responsible thinking can be developed. This age group is the most energetic and creative. From them the first step can be taken towards the building the new nation. “But What Can Students Do For The Country ??”. The students can take small steps towards the nation like saving the water and motivate their parents to save energy and do less wastages and they knew the importance of the renewable energy so they can motivate their guardians or their parents to use the renewable resources and this small can contribute the Country in very broader way.

“They are at an age where positive habits and responsible thinking can be developed.”

The journey towards great and powerful India is depends on the youth and what steps it takes today. And those steps which form the nation with holding the great responsibility and burden of the nation should be taken very carefully and planned in every direction and in every way, Because it holds the future of the country. They should be skilled and know how to implement those skills in problem solving and they should be ready to face real world problems from today for upcoming future. And by taking these small steps we can build a strong and powerful nation. The idea should be small but the thought behind that idea must be great. By using the valuable asset that is youth in correct way. We can build a nation that can be taken as a example instead of taking some other example for ourselves.

Yashvardhan Singh

Class -XIIth C

TEACHERS' DAY CELEBRATION:



Teacher's Day was celebrated with great enthusiasm and heartfelt gratitude at PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, Gwalior, on 5 September 2026. The programme began with a warm welcome to the teachers and supporting staff members with roses, tilak and sweets. This was followed by Garlanding the portrait of India's second President Dr. Sarvepalli Radhakrishnan on his birth anniversary and the felicitation and the presentation of tokens of appreciation to Teachers as a gesture of respect and gratitude for their dedication and invaluable contribution for the enrichment and betterment of our vidyalaya. Students then stepped into the roles of teachers and conducted classes, gaining a meaningful insight into the responsibilities and challenges of the teaching profession.

The celebrations continued with a vibrant cultural programme featuring Guru Vandana, dance performances by students and speeches expressing admiration and gratitude towards the teachers and other non academic supporting staff members . The teachers and staff members enthusiastically participated in fun-filled activities, including Musical Chairs, creating moments of laughter and amusement.

The programme was further enriched with felicitation of Shri S.P Singh TGT (Social Science), Smt.Santosh Mishra TGT (Social Science), our substaff members Smt. Kusum Chaurasiya and Shri.Rampal who are going to be superannuated late this year after dedicating their whole life for the betterment of the country, society and it's people. Followed by an inspiring address by the Principal sir. The celebration concluded with a heartfelt Vote of Thanks by the students, expressing sincere appreciation to the teachers and everyone who contributed to the programme. The occasion beautifully reflected the bond between teachers and students, while reminding everyone that the influence of a dedicated teacher extends far beyond the classroom.

Rishit Salya

Class-12th A

The Invisible Sparks: Why the Heart of Teaching Can't Be Measured



Long before the morning bell rings, while the hallways are still dark and silent, a teacher's classroom holds a unique kind of magic—it is a room waiting to come alive. In those quiet moments, the desks sit empty and the whiteboard is clean. Yet, the air feels heavy with anticipation. Within an hour, this stillness will transform into a chaotic symphony of scraping chairs, rustling papers, and the vibrant chatter of growing minds. To the outside world, a teacher's life is often defined by the tangible things: lesson plans, curriculum standards, administrative meetings, and test scores. But anyone who has ever stood at the front of a classroom knows a deeper truth. The real heartbeat of education lives in the quiet, unscripted moments. It lives in the "invisible sparks" of human connection that happen every single day.

The Beauty of the Breakthrough

We live for the breakthroughs. Every educator carries a mental gallery of moments when a student's frustration suddenly dissolved into understanding. It is the exact second a struggling reader finally navigates a difficult paragraph without stumbling. It is the sudden change in posture when a complex math formula clicks, or when a shy child finally finds the courage to share their voice with the room. These are not just academic victories; they are deeply human ones. When a student experiences a breakthrough, they aren't just learning a subject. They are learning that they are capable and resilient. As teachers, we don't just witness these moments—we get to help ignite them. A Sanctuary Built on Trust Beyond the academics, a teacher's life is about building a community. For many children, the classroom is much more than a place to study history or science. It is a sanctuary. It is the most predictable, safe, and encouraging part of their entire day. The true impact of a teacher is found in the small gestures that never make it onto a report card. It is the welcoming smile at the door each morning. It is the patient ear that listens to a story that has nothing to do with the lesson plan. When we show up for our students, we are offering them a powerful message: You matter, you are seen, and you belong here.

Planting Seeds for the Future

One of the most profound truths of a teacher's life is that we rarely get to see the final chapter of our work. We teach a child for a few short months, and then they move on to the next grade, the next school, and eventually, adulthood. This lack of immediate closure is not a frustration; it is a beautiful responsibility. Education is an act of faith. Every day, teachers plant seeds of curiosity, kindness, and confidence. We may never sit under the shade of the trees that grow from those seeds, but we know they will grow. The encouragement offered today ripples out into the future in ways we cannot even imagine.

The Lasting Impression

At the end of the day, the classroom returns to the same quiet stillness of the early morning. The chairs are stacked, the lights are switched off, and the silence returns. Yet, the room feels entirely different because of what happened inside it. To be a teacher is to embrace a life that is exhausting, demanding, and beautifully unpredictable. But above all, it is a life of purpose. What happens inside these four walls matters. We aren't just managing classrooms or delivering lectures. We are shaping human potential, one invisible spark at a time.

"The future of a nation is shaped not by the dreams of its youth, but by the actions they take to turn those dreams into reality"

Anjali Sikarwar,

PGT English

PM SHRI KVNO. 1, GWALIOR: A PROFILE



PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, Gwalior is a prestigious educational institution functioning under Kendriya Vidyalaya Sangathan, New Delhi, Ministry of Education. The school has been continuously striving for academic excellence. It is affiliated with the CBSE Board.

Since last year, the school has been developed as a PM SHRI School. It is progressing towards quality education and inclusive development in accordance with the guidelines of the National Education Policy (NEP-2020) and the National Curriculum Framework (NCF-2023).

Best PM SHRI School

It is a matter of great pride for us that our school has been declared the Best PM SHRI School in the Bhopal Region of Kendriya Vidyalaya Sangathan.

Students and Teachers

The school currently operates in two shifts. Approximately 2,900 students are enrolled in the school. There are 100 trained regular teachers, while instructors for Computer Education, Sports, Music and Art are appointed on a contractual basis.

In addition, a Counsellor and a Special Educator for Children with Special Needs are also appointed.

Academic Quality

In the session 2024–25, the school achieved a 100% result in both Class X and Class XII Board Examinations. Seven students secured 100 marks in Skill Subjects in Class X, while eight students secured 100% marks in Skill Subjects in Class XII.

Major Activities and Initiatives

1. Inclusive Education
   Appointment of Special Educators.
   Braille books for visually impaired students; 118 books have been received so far.
   Provision of individual and group counselling facilities.

2. Teacher Training

   Teachers are trained through online and offline modes.

   Renowned physicist and Padma Shri awardee Prof. H. C. Verma interacted with students and teachers and presented complex concepts of science in a simple and lucid manner.

3. Skill Development

   Students are taught subjects such as Artificial Intelligence, Coding, Physical Activity Training, Robotics and Painting.

   Practical training in pottery, carpentry, electrical work, plumbing and gardening is also provided by experts.

   An ATL Lab has been established in the school, where students are continuously trained and encouraged in scientific and technological education and innovation.

   A Vocational Lab will be made available shortly; it is currently under construction.

4. FLN – Foundational Literacy and Numeracy

   Efforts are made to teach children language, mathematics and environmental studies through games and art.

   Colourful print materials and indigenous games are used to make learning enjoyable.

   Project BALA (Building as a Learning Aid) has been implemented.

5. Exposure Visits

Students are taken on educational visits to nearby institutions such as IIITM, Polytechnic College, Agricultural College, Doordarshan, All India Radio, ITI, etc.

6. Best Practices

   Scrap Garden: A beautiful and useful garden has been created using waste materials, providing an example of “Best Out of Waste.”

   No Negative News Assembly: News presented during the school assembly focuses only on positive and scientific developments, innovations and research.

   The school has an Open Gym, while a stadium and basketball court are also available within the school campus.

VANDANA DEEPAK SHUKLA

PGT ENGLISH

के.वि.संगठन स्थापना एवं वार्षिक दिवस समारोह



ग्वालियर। पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक१ में रंगारंग प्रस्तुतियों के साथ केंद्रीय विद्यालय संगठन का स्थापना दिवस समारोह श्रीमती कल्पना शर्मा अध्यक्ष विद्यालय प्रबंधन समिति, बालक बालिकाओं ने रंगारंग प्रस्तुति देकर सभी को मंत्र मुक्त कर दिया।

राजेश पांडेय ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत कर विद्यालय में हुए परिवर्तनों को अभिभावकों से साझा किया। पंजाबी नृत्य





वार्षिक उत्सव को रंगारंग प्रस्तुतियों के साथ मनाया गया केंद्रीय विद्यालय संगठन का स्थापना दिवस समारोह



ग्वालियर। सोमवार 15 दिसंबर को पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1 ग्वालियर में रंगारंग प्रस्तुतियों के साथ केंद्रीय विद्यालय संगठन का स्थापना दिवस समारोह श्रीमती कल्पना शर्मा अध्यक्ष,विद्यालय प्रबंधन समिति, (कुलपति राष्ट्रीय लक्ष्मी बाई शारीरिक शिक्षा संस्थान) ग्वालियर के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। सर्वप्रथम मां सरस्वती को माल्यार्पण कर सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। प्राचार्य श्री पाण्डेय द्वारा पौधा प्रदान कर मुख्य अतिथि का हरित स्वागत किया गया। द्वितीय पाली के विद्यार्थियों द्वारा मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात प्राथमिक कक्षा के नन्हे नन्हे बालक बालिकाओं ने रंगारंग प्रस्तुति देकर सभी को मंत्र मुक्त कर दिया।

राजेश पांडेय ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत कर विद्यालय में हुए परिवर्तनों को अभिभावकों से साझा किया। पंजाबी नृत्य एवं कालबेलिया नृत्य ने समा बांधा। हिंदी एवं अंग्रेजी एकांकी के माध्यम से सामाजिक संदेश दिया गया। मुख्य अतिथि श्रीमती कल्पना शर्मा के कर कमल से शत प्रतिशत एवं गुणवत्ता पूर्ण परीक्षा परिणाम के लिए स्नातकोत्तर एवं स्नातक शिक्षकों प्रथम एवं द्वितीय पाली को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए आज के समय में एआई से शिक्षा ग्राम करने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिए। आज के समारोह की प्रशंसा करते हुए प्राचार्य राजेश पांडेय के कार्यों की सराहना करते हुए सभी शिक्षकों का मनोबल बढ़ाया। श्रीमती वंदना दीपक शुक्ला अरुण खेवरिया एवं अनुराग गोस्वामी द्वारा कार्यक्रम का सफलता पूर्वक संचालन किया गया। यह जानकारी मीडिया प्रभारी श्रीमती भारती चावन ने दी।





"शिक्षा के शिल्पकार – भविष्य के सूत्रधार"











